मार्च (द्वितीय) 2020 | ₹ 30.00

चंपक

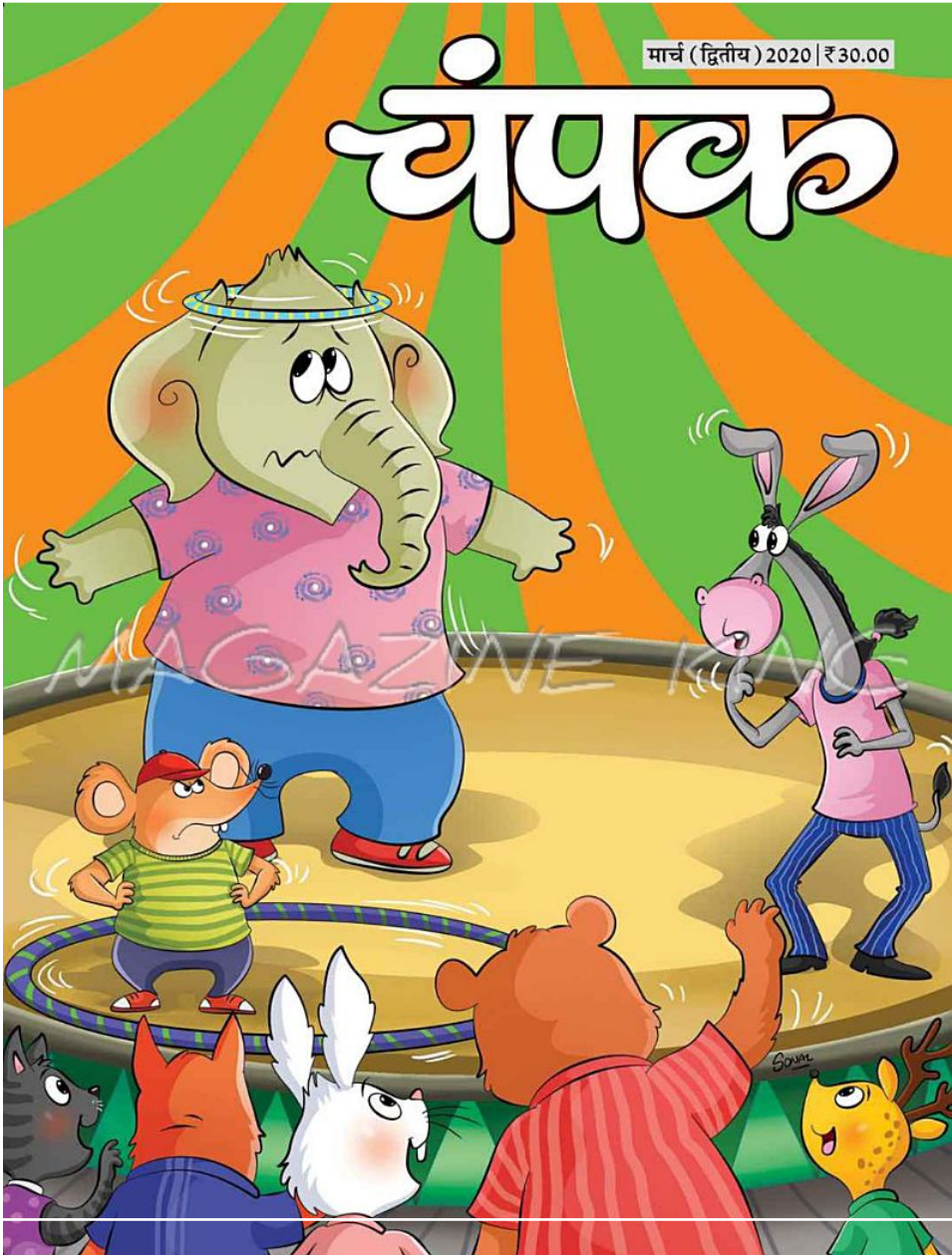

MAGAZINE KING

चंपक

मार्च (द्वितीय) 2020 अंक : 1185

संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002

सुनो कहानी

ब्लैकी भालू	4
मेरी पहली कविता	10
सोनू की तरकीब	14
मिंटू का इंसाफ	19
तरुण की परिवर्तनकारी यात्रा	28
लालच बुरी बला	32
रंग बदलता गिरगिट	38
नंबर प्लेट	42
मिल गया कंगन	48
संकोची मनु	55

मुखपृष्ठ

डमरू चला था होशियार बनने पर जब उस ने मीकू की रिंग जंबो पर और जंबो की मीकू पर फेंकी तो सब उस की बेवकूफी पर लगे मुसकराने.

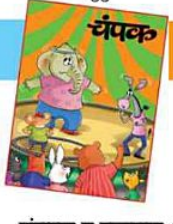

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	7
गलत को बताएं	8
याददाश्त बढ़ाएं	9
देखो हंस न देना	18
रास्ता बताओ	23
बताओ तो जानें	26
बिंदु मिलाओ	27
चित्र पूरा करें	31
छिपे चित्र ढूंढ़ें	35
स्मार्ट	36
विश्व गौरैया दिवस	41
विश्व रंगमंच दिवस	51
अंतर बताओ	54

MAGAZINE KING

चित्र कथाएं

डमरू और सिनेमा हौल	13
चीकू	24
दादाजी और विश्व निद्रा दिवस	46

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	17
नन्ही कलम से	44
चंपक क्रिएटिव चाइल्ड इवेंट	52

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीजी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.

Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
टोल फ्री नं. 18001038880 (सोम. से शनि सुबह 10 बजे से शाम के 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नेगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं:
writetochampak @delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

ब्लैकी भालू

कहानी ● नीरज कुमार मिश्रा

ब्लैकी भालू को पानी से बहुत डर लगता था, इसलिए वह रोज न नहा कर कभीकभी ही नहाता था. ताजा दिखने के लिए वह सिर्फ अपना मुंह ही धोता और बालों को गीला कर कंघी कर लेता था.

उस की मां उसे इस गंदी आदत के लिए कई बार डांट भी चुकी थीं, पर ब्लैकी पर डांट का कोई असर नहीं होता था.

ब्लैकी भारतवन में रहता था जहां राजा शेरसिंह राज करता था. उन दिनों भारतवन में 'स्वच्छता अभियान' चल रहा था. जंगल में खुद राजा शेरसिंह सफाई करने निकल पड़ते और सभी स्कूलों में जा कर उन्होंने बताया कि हम सब को रोज नहाना चाहिए ताकि हम साफ और रोगों से दूर रह सकें.

ब्लैकी के टीचर्स छात्रों को इस बारे में विस्तार से बताते. एक दिन जब स्कूल में लंच करने से पहले लिली जिराफ ने अपने बैग से एक छोटी सी शीशी निकाली और उस में से 2 बूंदें निकाल कर अपनी हथेलियों पर रगड़ लीं तो इस की खुशबू चारों तरफ फैल गई.

''यह इतनी अच्छी खुशबू वाली चीज क्या है, जिसे तुम ने अपने हाथों पर लगाया है?'' ब्लैकी अपनी जिज्ञासा रोक नहीं पाया.

''इसे सैनेटाइजर कहते हैं,'' लिली ने नाक से खुशबू लेते हुए बताया.

''इसे इस्तेमाल करने से क्या होता है?'' ब्लैकी ने पूछा.

''सैनेटाइजर एक प्रकार से हाथों को कीटाणुमुक्त करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है और इस को लगाने के बाद पानी से हाथों को धोने का झंझट भी नहीं होता. सिर्फ हाथों पर 2 बूंदें मलने से ही हाथ साफ हो जाते हैं,'' लिली को यह सब बताते हुए अच्छा लग रहा था.

'यह सैनेटाइजर तो बड़े काम की चीज है. साफ भी हो जाओ और पानी भी न छूना पड़े. जब मैं साफ रहूंगा तो मां भी नहीं डांटेंगी,' ब्लैकी ने सोचा

अगले दिन सुबह स्कूल जाने से पहले ब्लैकी ने मां से छिपाते हुए अपनी गुल्लक से कुछ पैसे निकाल लिए. स्कूल से जब ब्लैकी वापस आया तब वह

MAGAZINE KING

सैनेटाइजर की 8 शीशी खरीद लाया और मां से बच कर उन्हें बाथरूम में छिपा आया था. ''मां, तुम हमेशा नाराज रहती हो कि मैं नहाता नहीं हूं, अब में तुम्हें शिकायत का मौका नहीं दूंगा. में बाथरूम नहाने जा रहा हूं, तब तक आप मेरे लिए लंच निकाल कर रखो.''

ब्लैकी की बात सुन कर मां मन ही मन खुश हो गईं और सोचने लगीं, 'चलो, ब्लैकी को अक्ल तो आई.'

ब्लैकी को बाथरूम में नहाते हुए अभी 10 मिनट ही हुए थे, 'बचाओबचाओ' की आवाज आई तो मां

घबरा गईं और बाथरूम की तरफ भागीं. उन्होंने बाथरूम में जा कर देखा तो वहां कई सैनेटाइजर की शीशियां बिखरी हुई थीं और ब्लैकी के पूरे शरीर पर सैनेटाइजर लगा हुआ था तथा बदन पर लाल चकत्ते भी पड़ गए थे.

मां ने तुरंत डाक्टर गैंडा को फोन किया, लगभग 10 मिनट में डाक्टर गैंडा आ गए और उन्होंने ब्लैकी की सेहत का मुआयना किया और बोले, ''घबराने की कोई बात नहीं है, सैनेटाइजर की मात्रा अधिक होने से ही ऐसा हुआ है. मैं ने इंजैक्शन लगा दिया है अभी कुछ ही देर में आराम मिल जाएगा.''

''पर सैनेटाइजर तो घर में था ही नहीं,'' मां ने चौंकते हुए कहा.

ब्लैकी रोते हुए बोला, ''मां, मैं आप से छिपा कर गुल्लक से पैसे ले गया था और सैनेटाइजर खरीद कर ले आया था, क्योंकि इस के इस्तेमाल से पानी की जरूरत नहीं पड़ती और शरीर भी कीटाणुमुक्त हो जाता है.''

''इस में सैनेटाइजर की गलती नहीं है ब्लैकी, दरअसल, अति हर चीज की बुरी होती है. जब इस की 2 बूंदों से ही हाथ साफ हो सकते हैं, तुम ने तो इतनी सारी शीशियां शरीर पर मल लीं इसलिए नुकसान होना ही था,'' डाक्टर ने बताया.

''यह अल्कोहल से बना होता है जिस के प्रभाव से हाथ कीटाणुमुक्त रहते हैं, जब तुम ने बहुत सारा सैनेटाइजर लगा लिया तो इस में मौजूद अल्कोहल तथा अन्य कैमिकल ने तुम्हारी नाजुक खाल को नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया और वैसे भी हमें स्वच्छ जल से नहाना चाहिए तभी तन और मन प्रसन्न रहता है,'' डाक्टर गैंडा ने समझाया.

ब्लैकी अब समझ चुका था कि किसी भी चीज का अधिक प्रयोग अच्छा नहीं होता, बल्कि वह नुकसान पहुंचा सकता है.

ब्लैकी ने मां से माफी मांगी और ये भी कहा कि आगे से वह गुल्लक से पैसे भी नहीं निकालेगा और मां से बिना पूछे बाजार से भी कुछ नहीं खरीदेगा. ●

MAGAZINE KING

सुंदर रंग भरो

गलत को बताएं

इस चित्र में कुछ बातें ऐसी हैं जो सही नहीं हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

याद्दाश्त बढ़ाएं

नीचे दिए चित्र को देखें और प्रश्नों के उत्तर दें.

प्र.1. विज्ञान कितने छात्र सीख रहे हैं?
प्र.2. छात्र किस विषय के लिए ग्लोब का इस्तेमाल कर रहे हैं?
प्र.3. इतिहास अध्ययन समूह के छात्र किस के फोटो देख रहे हैं?
प्र.3. आप अपने पसंदीदा विषय के नाम बताएं.

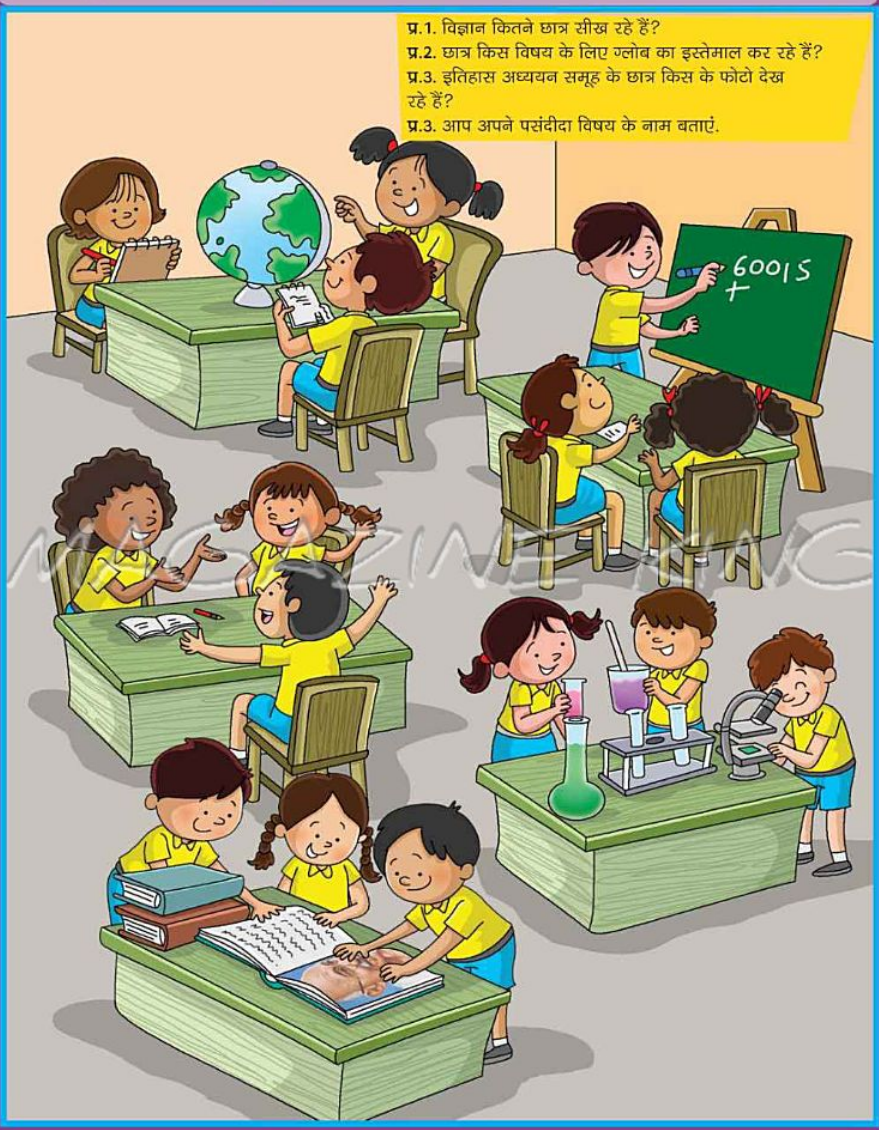

मेरी पहली कविता

कहानी ● कुसुम अग्रवाल

जूही जब स्कूल से घर लौटी तो वह थोड़ा परेशान थी. परेशानी का कारण था कि आज उस की टीचर ने एक अलग तरह का होमवर्क दिया था. सभी छात्रों को 'चारों ओर बढ़ते प्लास्टिक प्रदूषण की रोकथाम कैसे करें,' विषय पर प्रोजैक्ट बनाना था. इसी प्रोजैक्ट के अंतर्गत एक छोटी सी कविता भी लिखनी थी. ऐसी कविता जो लोगों को प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करने के लिए प्रेरित करे तथा आसानी से सभी इसे याद भी रख सकें.

जूही मेधावी छात्रा थी और लगभग हर विषय पर उस की अच्छी पकड़ थी, मगर कविता लिखनी तो उसे बिलकुल भी नहीं आती थी. उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह इस प्रोजैक्ट को पूरा करने के लिए कविता कैसे लिखेगी.

अध्यापिका का सख्त निर्देश था कि यदि कोई विद्यार्थी किसी कवि की लिखी कविता को अपने प्रोजैक्ट में शामिल करेगा तो उस की माइनस मार्किंग कर दी जाएगी.

पर जूही की समझ में कुछ नहीं आया था. इसलिए घर आ कर वह बिना कुछ खाएपिए उदास हो कर एक ओर बैठ गई.

मम्मी ने पूछा "जूही, क्या बात है, आज तुम इतनी चिंतित क्यों हो?"

MAGAZINE KING

जूही ने सारी बातें अपनी मम्मी को बताईं. जूही की बातें सुन कर मम्मी बोलीं, "इस में इतनी चिंता करने की क्या बात है? तुम भी अच्छी कविता लिख सकती हो."

"मगर कैसे? जब अध्यापिका ने समझाया तो मुझे कुछ समझ नहीं आया," जूही ने मुंह लटकाते हुए कहा.

"तुम जल्दी से कुछ खा लो और कुसुम आंटी के घर जाओ. वे एक प्रसिद्ध कवयित्री हैं. वे तुम्हारी जरूर मदद करेंगी."

कुसुम आंटी का नाम सुनते ही जूही खुश हो गई. वैसे भी उसे कुसुम आंटी से बातें करना अच्छा लगता था. वह

आसानी से कह देते हैं मगर पद्य में लिखना उन के लिए मुश्किल होता है. ''पर तुम यह कर सकती हो. चलो, पहले तुम अपनी बात को साधारण तरीके से बताओ,'' कुसुम आंटी ने जूही को प्रोत्साहित करते हुए कहा.

जूही ने झिझकतेझिझकते कहा, ''प्लास्टिक का अब गया जमाना.''

''बहुत अच्छे, ध्यान से देखो. पंक्ति का आखिरी शब्द है, जमाना. अब हम को इस के समान तुकांत वाले शब्द ढूंढ़ने हैं. जैसे जमाना के समान तुकांत हैं खाना, जाना, आना, लाना, पाना, जमाना, ना ना आदि. तुम ऐसे ही एक शब्द को ले कर अपनी दूसरी पंक्ति बना सकती हो. चलो, एक मैं बनाती हूं. सुनो, ''प्लास्टिक को बोलो, अब ना ना,''

दूसरी पंक्ति सुनते ही जूही ताली बजाने लगी और बोली,
''प्लास्टिक का अब गया जमाना.
प्लास्टिक को बोलो अब ना ना.''

झटपट कपड़े बदल कर कुसुम आंटी के घर पहुंच गई. जूही को देख कर कुसुम आंटी खुश हो गईं. जूही ने कुसुम आंटी को अपनी समस्या बताई तो वे मुसकराने लगीं और बोलीं, ''चलो, हम अभी कविता लिखनी शुरू करते हैं. विषय तो तुम्हें पता ही है कि देश को प्लास्टिक से मुक्त करने के लिए देशवासियों को जागरूक करना होगा. अब तुम सोचो कि हम इस में क्याक्या लिख सकते हैं?'' कुसुम आंटी ने पूछा.

जूही ने सोचना शुरू किया और जल्दी ही उस के दिमाग में कुछ बातें आ गईं. उस ने वह बातें कुसुम आंटी को बताईं.

''जूही, ये अच्छी बातें हैं,'' कविता का अर्थ है, अपने विचारों को लयबद्ध छंदों में प्रस्तुत करना. गद्य और पद्य में यही अंतर होता है. आमतौर पर लोग अपनी बात को गद्य में तो

MAGAZINE KING

"कितनी सुंदर कविता बन रही है. चलो, अब तुम तीसरी पंक्ति बनाओ," कुसुम आंटी ने जूही को फिर कहा.

जूही फिर सोच में पड़ गई, कुछ सोच कर बोली,
"प्लास्टिक को मत पास बुलाना,
इस को थोड़ा दूर भगाना."

"बहुत बढ़िया," कुसुम आंटी ने कहा. अब तुम इसी तरह कुछ और पंक्तियां लिख लो. बस, बन जाएगी तुम्हारी कविता. इतना ध्यान रखो कि सभी पंक्तियों में विचारों का तालमेल ठीक बैठे. कविता की अंतिम 2 पंक्तियों में उन को समेट भी लेना चाहिए. ठीक उसी प्रकार जैसे तुम निबंध आदि में करती हो.

अब जूही को पूरी बात समझ में आ गई थी. धीरेधीरे उसे अध्यापिका की बातें भी याद आ रही थीं, जो कुसुम आंटी की बातों से मेल खा रही थीं.

वह बोली, "बहुतबहुत धन्यवाद आंटीजी, शेष कविता मैं घर जा कर पूरी कर लूंगी."

"ठीक है और जब कविता पूरी हो जाए तो मुझे भी दिखाना. थोड़ी बहुत कमी रहेगी तो मैं ठीक कर दूंगी. हां, एक बात और कविता लिखने के बाद उसे बोल कर जरूर देखना. जब कविता में लय होगी, तभी वह खूबसूरत कहलाएगी."

"ठीक है आंटीजी," कह कर जूही खुशीखुशी अपने घर चली गई. अब उसे प्रोजैक्ट पूरा करने में कोई डर नहीं लग रहा था. साथ ही उसे यह भी खुशी थी कि वह पहली बार कविता लिख रही थी. उस ने सोचा कि मैं अपनी पहली कविता सुंदरसुंदर अक्षरों में लिख कर अपने कमरे में सजाऊंगी."

डमरू और सिनेमाहौल
कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव
डमरू को डेविड ऊंट के सिनेमाहौल में काम मिला.
डमरू, सिनेमाहौल की देखभाल ठीक से करोगे, इस के लिए तैयार हो जाओ.
ठीक है मालिक, लेकिन यहां इतना अंधेरा क्यों है?
अंधेरा इसलिए है कि तुम्हें सिनेमा की अच्छी क्वालिटी अंधेरे में ही देखने को मिलेगी.
अच्छा, तो यह इस तरह से काम करता है.
हां, और दर्शक बिना किसी बाधा के मूवी आराम से देख सकते हैं.
अच्छा, तो ये बात है, मालिक.
आज मैं ने सारे टिकट बेच दिए हैं. इसलिए इस बात का ध्यान रखना कि कुछ भी गड़बड़ न हो. मैं थोड़ी देर में आता हूं.
चिंता न करें मालिक. मैं हर चीज का खयाल रखूंगा.
थोड़ी देर बाद :
डमरू, इतना अंधेरा क्यों है? दर्शक यहां पर हैं और शो शुरू होने वाला है.
क्योंकि मैं ने लाइट डिसकनैक्ट कर दी है.
क्या? तुम्हें ऐसा करने के लिए किस ने कहा?
मालिक, सुबह आप ही ने तो कहा कि जब अंधेरा हो तब हम सिनेमा की अच्छी क्वालिटी पा सकते हैं.
SONAL
हां, इस के लिए तुम्हें लाइट का स्वीचऔफ करनी थी, उसे डिसकनैक्ट नहीं करना था, अबदर्शक अपने रुपए वापस मांगेंगे, इसलिए यहां से भाग जाओ.
यह बात तो आप को मुझे पहले बतानी चाहिए थी.
मेरा कारोबार चौपट हो गया है. डमरू ने मेरा सब कुछ डिसकनैक्ट कर दिया है.

जोर से हंसते देख शेरा और वेरा हैरान रह गए. जब सोनू रो रहा था तो वे सोच रहे थे कि यह सलोना सा बछड़ा उन्हें देख कर डर गया है और इसलिए रो कर उन से दया की भीख मांग रहा है. लेकिन इतनी जोर से इस के हंसने का क्या कारण हो सकता है? यह सोच कर शेरा और वेरा असमंजस में पड़ गए.

''अरे सोनू, तू हमें देख कर ऐसे दांत फाड़ कर क्यों हंस रहा है? क्या तुझे हम से डर नहीं लगता?'' वेरा ने पूछा.

सोनू अपनी हंसी किसी तरह रोकते हुए बोला, ''मुझे ऐसे शेरों से क्यों डरना, जिन में एक की पूंछ कटी है और दूसरे की लंगूर जैसी लंबी पूंछ है.''

यह सुनते ही शेरा और वेरा अपनीअपनी पूंछ देखने लगे. लेकिन पूंछ तो उन दोनों की सही सलामत थी.

शेरा ने उसे डपटते हुए कहा, ''अरे बछड़े, यह बता कि पहले तू रो क्यों रहा था और अब दांत फाड़ कर हंस क्यों रहा है?''

सोनू ने गंभीरतापूर्वक कहा, ''सौरी, अंकल, यह हंसने की बात नहीं है. आप को तलाशने के लिए मैं सुबह से जंगल में भटक रहा हूं. इस कारण मैं अपने झुंड से भी बिछड़ गया हूं.''

''तू हमें सुबह से क्यों तलाश रहा है?'' वेरा ने पूछा.

''अंकल, मेरा नाम सोनू है. मैं आप को इसलिए तलाश रहा था ताकि मैं आप दोनों से जुड़ी बात आप को बता सकूं. लेकिन यह बड़ी मजाकिया है,'' उस ने कहा.

अब शेरा और वेरा का दिमाग पूरी तरह चकरा गया. दोनों सोचने लगे कि ऐसी क्या बात हो सकती है, जो उन से जुड़ी हुई है और इस बछड़े को पता है, हमें नहीं.

वे अब सोनू का शिकार करने की बात सिरे से भूल गए. शेरा ने बड़ी जिज्ञासा से पूछा,

''अरे सोनू, अब बता भी दो वह क्या बात है?''

सोनू गंभीर हो कर बोला, ''कृपया आप दोनों आराम से बैठिए और सुनिए.''

वेरा सोनू की बात सुनने के लिए तुरंत आज्ञाकारी बच्चों की तरह बैठ गया. फिर सोनू निडरतापूर्वक उन के सामने बैठते हुए बोला, ''आज रात मेरे सपने में वन देवता प्रकट हुए. उन्होंने कहा कि जंगल में कोई अनहोनी घटना घटने वाली है. तुम्हारे जंगल के खूंखार शेरा और वेरा शेरों में से एक की पूंछ कटने वाली है और दूसरे की पूंछ लंगूर की तरह लंबी होने वाली है.''

''अच्छा, उन्होंने ऐसा कहा?'' वेरा ने आश्चर्य से पूछा.

''बिलकुल, उन्होंने मुझ से ठीक ऐसा ही कहा,'' सोनू बोला.

''फिर तुम ने क्या कहा, सोनू?'' शेरा ने पूछा.

''मैं ने वन देवता से कहा कि महाराज इस से तो हमारे जंगल की शान शेरा और वेरा की खूब मजाक उड़ेगी. वे तो कहीं मुंह दिखाने लायक भी नहीं रहेंगे. क्या इस का कोई उपाय नहीं है?''

''तब उन्होंने क्या कहा? क्या उपाय बताया?'' उन्होंने पूछा.

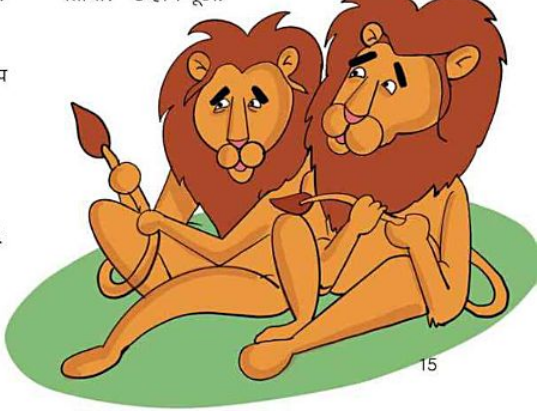

MAGAZINE KING

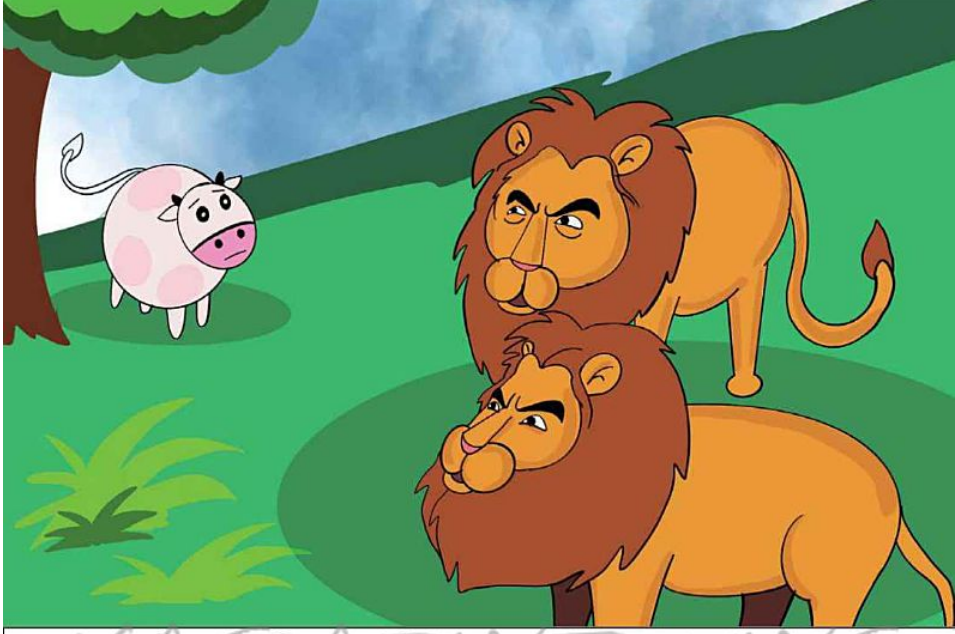

सोनू की तरकीब

कहानी ● कुमुद कुमार

सोनू बछड़ा एकदम रुई के जैसा सफेद था. वह गोलमटोल, एकदम मस्तमौला, जवान और बुद्धिमान था. वह सारी दुनिया घूम लेना चाहता था. सोनू कभी मैदान में होता तो कभी पहाड़ी पर, कभी नदी के किनारे मस्ती कर रहा होता तो कभी बेवजह दौड़ लगा रहा होता.

एक दिन सोनू मैदान में हरीहरी घास चर रहा था. चरतेचरते उसे पता ही नहीं चला कि वह कब अपने झुंड से दूर चला गया. उसे इस का पता तब चला, जब उसे अनजाने खतरे का एहसास हुआ. उस ने मुंह उठा कर देखा तो वह डर से बुरी तरह कांप गया. उस ने वापस जाने का फैसला किया लेकिन यह खतरनाक था.

उस ने देखा जंगल के सब से खूंखार शेरा और वेरा शेर उस के काफी नजदीक आ चुके थे. उस का उन से बचना मुश्किल था. सोनू को समझ आ गया था कि कोई अच्छी तरकीब ही उस की जान बचा सकती है. यदि उस ने भागने की कोशिश की तो दोनों शेर उसे दबोच कर मार डालेंगे.

सोनू घास चरने का नाटक करते हुए तेजी से कोई तरकीब सोच रहा था. डर से उस की हालत खराब थी. उस की छोटी सी गलती उस की जान ले सकती थी.

शेरा और वेरा को लगा कि सोनू ने उन्हें नहीं देखा. वे आराम से उस के नजदीक पहुंच गए थे. जैसे ही शेरा और वेरा उस के पास गए, सोनू को एक तरकीब सूझी. वह जोर से रोने लगा. ''तू चाहे कितना भी तेज रो ले बेटा, आज तेरी जान नहीं बचनी है,'' शेरा ने मुसकराते हुए कहा.

यह सुनते ही सोनू जोरजोर से हंसने लगा, सोनू को

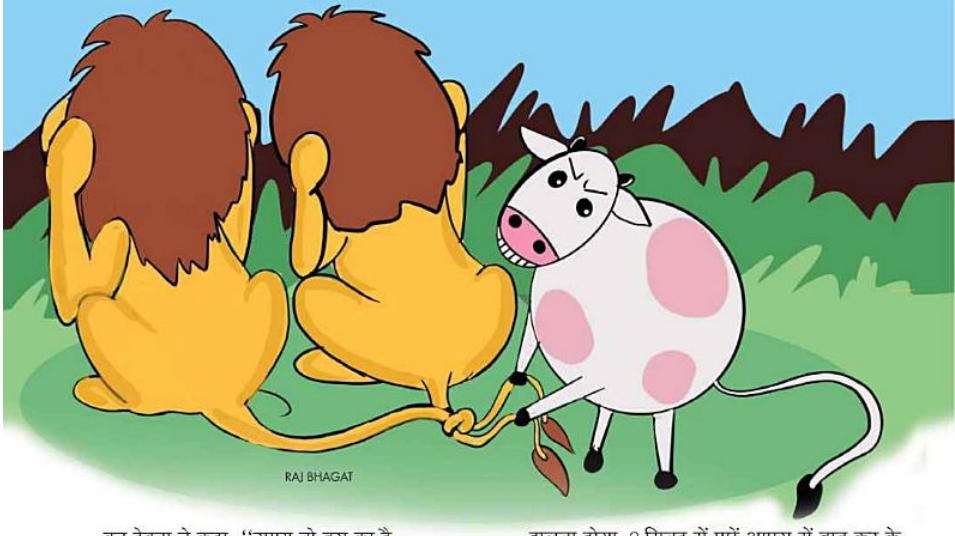

वन देवता ने कहा, ''उपाय तो इस का है, सोनू, लेकिन लगता नहीं कि शेरा और वेरा इस उपाय को मानेंगे.''

''सोनू, तुम उपाय बताओ. हम अपनी पूछों को बचाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं,'' दोनों बोले.

सोनू समझ गया कि शेरा और वेरा अब उस की गिरफ्त में हैं. उस ने कहा, ''सोच लो. वैसे उपाय कोई मुश्किल नहीं है.''

''सोनू, तुम उन का बताया उपाय जल्दी से बताओ. हम उस उपाय को मानने के लिए एकदम तैयार हैं,'' वेरा ने अधीरता से कहा.

''तो सुनो, उन्होंने कहा कि अगर शेरा और वेरा की पूंछें आपस में बांध कर समझौता कर लें तो दोनों की पूंछें वैसी की वैसी ही रहेंगी.''

''लेकिन ऐसे कैसे होगा, सोनू?'' शेरा ने हड़बड़ाते हुए पूछा.

''वन देवता ने बताया है, बस, करना यह होगा कि सिर्फ 2 मिनट के लिए मुझे आप की पूंछों में फंदा डालना होगा. 2 मिनट में पूंछें आपस में बात कर के समझौता कर लेंगी. इतनी देर आप दोनों को अपनी आंखें और कान बंद रखने होंगें, जिस से पूछों की बातें न तो आप सुन सको और न उन के इशारों को देख सको.''

''सोनू, हम अपनी पूंछें बचाने के लिए तैयार हैं. तुम हमारी पूंछों में जल्दी से फंदा डालो. हम अपने आंखकान बंद रखेंगे,'' वे सहमत हो गए.

सोनू ने शेरा और वेरा की पूंछें आपस में बांध दीं और 2 मिनट के लिए उन्हें मन ही मन 1 से 120 तक गिनती गिनने को कहा.

शेरा और वेरा ने अपनी आंखें बंद कर लीं. दोनों ने उंगलियां डाल कर कान भी बंद कर लिए. सोनू मौका पा कर इन खूंखार शेरों से जान बचाने के लिए वहां से सिर पर पैर रख कर भागा और तब तक नहीं रुका जब तक वह अपने झुंड में नहीं पहुंच गया.

जब शेरा और वेरा ने अपनी आंखें और कान खोले तो उन्हें सोनू दूरदूर तक कहीं दिखाई नहीं दिया. वे समझ गए कि सोनू उन्हें उल्लू बना गया है. ●

MAGAZINE KING

मजेदार विज्ञान

कलर क्रोमैटोग्राफी

आइए, जानते हैं, कागज के एक टुकड़े पर रंग कैसे फैलता है.

आप को चाहिए :

● टीसू पेपर ● आधा गिलास पानी ● ब्लैक स्कैचपेन

ऐसा करें :

1. टीसू पेपर की एक लंबी पट्टी काटें और स्कैचपेन से एक मोटी लाइन खींचें, तल की तरफ जगह छोड़ दें.

2. पेपर की पट्टी को गिलास के मुंह से लटका दें, सिर्फ उस का छोर पानी में

डूबा रहे. काली लाइन पानी की सतह से ऊपर होनी चाहिए.

देखें :

जैसे ही टीसू पेपर पानी को सोखता है, रंग पसरते हुए फैलने लगता है. काली लाइन अलगअलग तरह के रंगों को छोड़ना शुरू करती है और तब तक फैलती रहती है जब तक टीसू पेपर को गिलास से निकाल नहीं लेते हैं.

सोचें :

काली स्याही अलगअलग तरह के रंगों को कैसे छोड़ती है?

टीसू पेपर छिद्रिल होता है यानी इस में छोटेछोटे छेद होते हैं. चूंकि टीसू पेपर पानी को सोखता है, इसलिए छेदों में पानी भर जाता है और अन्य छेदों को भरने के लिए पानी ऊपर चढ़ने लगता है. जब ऐसा होता है तब स्याही के साथ पानी मिल जाता है और अपने साथ उसे भी ऊपर खींचने लगता है. स्कैचपेन की काली स्याही कई प्रकार के रंगद्रव्य से बनी होती है. ये रंगद्रव्य भिन्नभिन्न साइज के अणुओं यानी किसी पदार्थ की सब से छोटी इकाई के बने होते हैं. इन अणुओं के घुलने की क्षमता अलग होती है यानी पानी जब स्याही में मौजूद भिन्नभिन्न रंगों के अणु पानी के साथ टीसू पेपर के अंतिम छोर तक बढ़ने लगते हैं. इस तरह से हम भिन्नभिन्न रंगों को देख पाते हैं, जो स्याही में पहले से ही मौजूद होते हैं.

पता करें :

हम अपनेअपने वातावरण में कलर क्रोमैटोग्राफी कहां देखते हैं?

commons.wikimedia.org

पत्तों में अलगअलग तरह के रंगद्रव्य होते हैं, जो उन्हें उन का रंग प्रदान करते हैं. हरा क्लोरोफिल सब से सामान्य रंगद्रव्य है, जो पत्तों में पाया जाता है, लेकिन अन्य रंगों के रंगद्रव्य भी जैसे कैरोटिनोयड होते हैं जो पते को पीला और औरेंज कलर प्रदान करते हैं तथा एंथोकाइनिन इन्हें लालरंग प्रदान करते हैं.

गर्मियों में जब बहुत तेज धूप होती है, तब पत्ते काफी ज्यादा क्लोरोफिल बनाते हैं, जो पौधों के लिए खाना बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण और जरूरी है. ऐसे समय में पत्तों में क्लोरोफिल इतना ज्यादा होता है कि यह अन्य रंगों पर हावी रहता है. हरा रंग प्रभाव में रहता है अन्य रंग छिप जाते हैं. शरद ऋतु में दिन छोटा और तापमान में बदलाव होने की वजह से पत्ते हरा क्लोरोफिल बनाना बंद कर देते हैं और उन की खाना बनाने की प्रक्रिया भी बंद हो जाती है. इस के कारण हरा क्लोरोफिल छोटेछोटे अणुओं में टूटने लगता है और पत्तों से हरापन गायब होने लगता है. अब पत्तों में पहले से मौजूद अन्य रंगद्रव्य दिखने शुरू हो जाते हैं. यही वजह है कि शरद ऋतु में पत्ते पीले और लालरंग के हो जाते हैं.

देखो हंस न देना

जौन शरारती लड़का था. एक दिन टीचर ने स्कूल में पानी के फौर्मूले के बारे में बताया. अगले दिन टीचर : जौन, पानी के फौर्मूले के बारे में बताओ.
जौन : एच, आइ, जे, के, एल, एम, ओ.
टीचर : क्या?
जौन : मैम, कल आप ने पानी के फौर्मूले के बारे में कहा था, एच टू ओ, मैं ने पूरा बता दिया. सभी बच्चे हंस पड़े.

मिथिन देव, 8 वर्ष
चैन्नई

श्याम (राम से) : राम, मैं ने टैस्ट के लिए पढ़ाई पूरी नहीं की.
राम : कोई बात नहीं. मैं जैसा कहूं, बिलकुल वही चीज कहना.
श्याम : ठीक है.
टीचर (अगले दिन) : राम, हमारा प्रधानमंत्री कौन है?
राम : नरेंद्र मोदी.
टीचर : क्या और कोई पृथ्वी है?
राम : वैज्ञानिक इस पर खोज कर रहे हैं.
टीचर : श्याम, पहला व्यक्ति कौन है जिस ने चांद पर पैर रखा?
श्याम : नरेंद्र मोदी.
टीचर : क्या तुम ने पढ़ाई की है?
श्याम : वैज्ञानिक इस पर खोज कर रहे हैं.

निकिता, 11 वर्ष
कोलकाता

रोहन (लीना से) : लीना, मुझे तुम्हारी मदद चाहिए.

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

प्र. चांद कब सब से अधिक भारी होता है?
उ. जब यह पूरा गोल होता है.

रचना जैन, 10 वर्ष,
मुंबई

लीना : ओके, बताओ, क्या समस्या है?
रोहन : जब मैं अपने माथे को छूता हूं, तो यह दर्द करता है. जब जबड़े को छूता हूं, तो दुखता है. जब पेट को दबाता हूं, तो मैं चिल्ला उठता हूं. यह क्या हो सकता है?
लीना : मुझे नहीं पता, तुम्हारे लिए ठीक यही रहेगा कि तुम तुरंत डाक्टर को दिखाओ.
रोहन : ओके, मैं आज डाक्टर के पास जाता हूं. तुम से बाद में मिलूंगा.

एक दिन बाद :
लीना : रोहन, तुम डाक्टर के पास गए थे क्या? डाक्टर रोहन ने क्या कहा? तुम्हें क्या हुआ था?
रोहन : डाक्टर ने कहा कि मेरी एक उंगली टूट गई है.

निधि शाह, 13 वर्ष
नई दिल्ली

बेटा : पापा, क्या आप अंधेरे में साइन कर सकते हैं?
पापा : हां, लेकिन मुझे अंधेरे में साइन क्यों करने पड़ेंगे?
बेटा : मुझे आप के साइन अपने रिपोर्ट कार्ड पर आप के देखे बगैर चाहिए, इसलिए.

रुषभ, 12 वर्ष
गुजरात

जौनी : चींटियां वास्तव में कठोर परिश्रम करती हैं. वे सिर्फ और सिर्फ काम करती हैं, कभी खेलती नहीं हैं.
पीटर : जब भी मैं पिकनिक पर जाता हूं, तो वे वहां कैसे आ जाती हैं?

सिमी सिन्हा, 8 वर्ष
मुंबई

साम : मैं छुट्टियों में बेंगलुरु जा रहा हूं और चाहता हूं कि तुम मेरी कार पर एक आंख गड़ाए रखो, क्योंकि यह बहुत महंगी है.
सहायक : ओके, सर, लेकिन मैं दूसरी आंख का क्या करूं.

शमिय वीटी., 8 वर्ष
इंदौर

MAGAZINE KING

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमेल : writetochampak@delhipress.in
और SMS: 9619587613
ऑनलाइन विज़िट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

मिंटू का इंसाफ

कहानी ● डा. के. रानी

डोडो गधा बहुत मेहनती था. वह दिन भर खेतों में मेहनत करता और रात को आराम करता था. वह अकेला अपने काम में खुश था.

एक दिन डोडो की तबीयत खराब हो गई. वह खेतों में काम करने नहीं जा पाया. कुछ दिन तक तो उस के साथी उस का हालचाल पूछने आते और उस के खाने का भी इंतजाम कर देते. धीरेधीरे उन सब ने आना बंद कर दिया. डोडो बिलकुल अकेला पड़ गया. लंबी बीमारी के कारण उस की जमा पूंजी भी खत्म हो गई. अब उस के पास दवा के भी पैसे नहीं थे.

उस की इस हालत पर फीबोह गिलहरी को बड़ी दया आई. उस ने जंगल से कुछ जड़ीबूटियां ला कर डोडो को दीं और बोली, ''डोडो, तुम इन्हें समय से खाते रहना. देखना तुम्हारी तबीयत जल्दी ही सुधर जाएगी.''

''तुम्हारा बहुतबहुत धन्यवाद फीबोह,'' डोडो बोला. ''तुम ने मेरा खयाल रखा. मेरी इस बीमारी के कारण सभी दोस्त मुझे अकेला छोड़ कर चले गए हैं.''

''उदास मत हो डोडो. धीरेधीरे सब ठीक हो जाएगा. बस, तुम हिम्मत रखना,'' फीबोह बोली.

फीबोह उसे रोज जड़ीबूटियां दे देती. किसी तरह आसपास के खेतों से थोड़ा बहुत घास चर कर डोडो अपना समय गुजार रहा था. फीबोह की जड़ीबूटियों से उसे धीरेधीरे फायदा होने लगा. वह बीमारी से उबर गया, अभी उस के अंदर कमजोरी बहुत थी. इसलिए वह भी खेतों में काम नहीं कर सकता था.

डोडो चाहता था कि पहले की तरह खेतों में काम कर के वह अपना गुजरबसर करे. कमजोरी के कारण शरीर उस का साथ नहीं दे रहा था.

एक दिन डोडो भोजन की तलाश में जंगल में काफी दूर निकल गया. वहां उस की मुलाकात कीकू गाय से हुई. उस ने पूछा, ''बहुत दिनों बाद दिखाई दे रहे हो डोडो.''

''मेरी तबीयत कुछ हफ्ते से ठीक नहीं थी,'' डोडो बोला.

''अब कैसे हो?'' कीकू ने पूछा.

''बस, जैसा भी हूं तुम्हारे सामने हूं. किसी तरह जान बच गई है, लेकिन शरीर में ताकत नहीं है,'' दुखी हो कर डोडो बोला.

''तुम धीरेधीरे ठीक हो जाओगे, चिंता क्यों करते हो?'' कीकू ने उसे दिलासा दिया. थोड़ी देर वे बातें करते रहे.

''खाने का गुजारा तो किसी तरह हो जाता है कीकू, लेकिन मैं चाहता हूं कि पहले की तरह काम करूं और कुछ पूंजी जमा करूं? क्या तुम मुझे काम दिलाने में मदद कर सकती हो?'' डोडो ने पूछा.

कीकू कुछ देर सोचते हुए बोली, ''मेरी एक सहेली

MAGAZINE KING

है गागा बकरी, उस का बड़ा सा बगीचा है. कुछ दिन पहले वह कह रही थी कि उसे खेत की चौकीदारी के लिए एक गार्ड की जरूरत है. मैं उस से बात करती हूं.''

''हां, यह काम तो मैं आसानी से कर सकता हूं, लेकिन अभी दिन भर मेहनत नहीं कर सकता,'' डोडो बोला.

''तुम उस से मिल लेना. मैं तुम्हें उस का पता दे दूंगी. वह भली बकरी है, शायद तुम्हारी कुछ मदद कर दे.''

''धन्यवाद कीकू, मैं जल्दी ही उस से मिलने जाऊंगा,'' डोडो बोला.

अगले दिन डोडो गागा से मिलने के लिए सुबह से ही तैयार हो गया. दिन में धूप तेज थी इसलिए उस ने तय किया कि वह शाम को गागा के घर जाएगा. उस का घर और बगीचा दोनों आसपास ही थे. उस के घर पहुंच कर डोडो ने आवाज लगाई, लेकिन अंदर से कोई जवाब नहीं आया. वह दरवाजे तक पहुंचा. दरवाजा खुला था. उस ने अंदर झांका तो इतनी देर में गागा अपने बगीचे से लौट आई. उस ने एक अजनबी गधे को अपने घर के अंदर घुसते देखा तो वह चौकन्नी हो गई. उसे समझ नहीं आया कि अचानक यह क्या हो गया. गागा जोर से चिल्लाने लगी. ''चोर, चोर.''

यह देख कर डोडो हैरान रह गया. वह गागा से बोला, ''कृपया मेरी बात सुनो. मैं चोर नहीं हूं, मैं डोडो गधा हूं और यहां काम की तलाश में आया हूं.''

''काम की तलाश में कोई घर के अंदर नहीं झांकता. तुम मुझे बेवकूफ मत बनाओ,'' गागा ने चिल्लाते हुए अपने पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया.

''नहीं गागा, मैं सच कह रहा हूं. मुझे कीकू गाय ने तुम्हारे पास भेजा था. तुम चाहो तो उस से पूछ सकती हो,'' डोडो बोला.

गागा ने उस की एक न सुनी और आसपास के वनवासियों को बुला लाई. डोडो यहां पहली बार आया था. किसी ने उसे पहचाना नहीं और सब उसे चोरचोर कह कर पुकारने लगे. अपनी हालत पर डोडो को रोना आ रहा था.

''चलो, इसे थाने ले कर चलते हैं. इसे कड़ी सजा मिलनी चाहिए,'' चिंकू हिरण ने चिल्लाते हुए कहा.

''इस समय थाने जाने से कोई फायदा नहीं. अभी इसे कमरे में बंद रहने दो. सुबह रिपोर्ट लिखाने थाने जाएंगे,'' भीरु भालू बोला.

''थानेदार बहुत भले प्राणी हैं. उन्हें इस समय

परेशान करना ठीक नहीं है. रात हो चुकी है.''

''तुम ठीक कहते हो,'' शुमि भेड़ सहमति में बोली. ''हम सुबहसवेरे ही थानेदार को यहां बुला कर लाएंगे और इस गधे की रिपोर्ट भी लिखवा देंगे.''

भीरु और शुमि रात वहां रुक गए. सुबह तीनों थाने पहुंचे, ''थानेदार मिंटू सिंह, मेरे घर में कल शाम एक चोर घुस आया. मैं ने उसे कमरे में ही बंद कर दिया है.''

''मैं तुम्हारे साथ चल कर उस से पूछताछ करूंगा,'' मिंटू सिंह हाथी बोले.

सुबहसुबह वन के कई प्राणी गागा के आंगन में इकट्ठे हो गए थे. हर कोई चोर के बारे में ही पूछ रहा था, ''गागा, तुम्हें रात में चोर ने तंग तो नहीं किया?''

''नहीं, उस ने ऐसा कुछ नहीं किया,'' गागा ने कहा.

''उसे अपनी गलती का एहसास हो गया होगा. इसीलिए चुपचाप एक किनारे पड़ा रहा.''

''लगता तो ऐसा है,'' गागा ने जवाब दिया.

तभी थानेदार मिंटू सिंह बोले, ''दरवाजा खोलो, मुझे उस से मिलना है.'' गागा ने झट से दरवाजा खोल दिया. डोडो डरासहमा कमरे के एक किनारे खड़ा था. दरवाजे पर खड़े सभी प्राणी एकसाथ बोले, ''थानेदार, इस चोर को छोड़ना नहीं. कड़ी से कड़ी सजा देना.''

''हां, यह गधा चोर है,'' कई स्वर एकसाथ गूंजे. थानेदार ने डोडो को नीचे से ऊपर तक देखा. दुबलेपतले शरीर वाला डोडो डर से कांप रहा था.

उसे देख कर थानेदार को एक प्रसंग याद आ गया, जो उस ने एक कार्यक्रम में कुछ दिन पहले सुना था.

एक बार गांधीजी के आश्रम में भी ऐसे ही एक चोर

घुस आया था. उसे याद कर के थानेदार ने कुछ सोचा और डोडो से पूछा. ''तुम ने कल से कुछ खाया है या नहीं?''

डोडो ने गरदन हिला कर सचाई बता दी.

उन की बात सुन कर गागा बोली. ''थानेदार, आप यह सब क्या पूछ रहे हैं? यह एक चोर है. भला कहीं चोर को खानेपीने के लिए पूछा जाता है? इस की तो पिटाई होनी चाहिए.''

''क्या चोरचोर लगा रखा है तुम ने गागा? तुम भूल रही हो कि डोडो भी एक प्राणी है. उस की हालत देख रही हो. लगता है कई दिनों से बीमार है,'' थानेदार बोला.

अपने लिए प्राणी शब्द सुन कर डोडो की आंखों से आंसू झरने लगे. वह हाथ जोड़ कर बोला, ''मैं ने जीवन में पहली बार ऐसा थानेदार देखा है, जिस ने एक चोर को प्राणी समझा है. मैं सच कहता हूं थानेदार, मैं ने कोई चोरी नहीं की है. आप चाहें तो कीकू से पूछ सकते हैं. वह वन के दूसरे छोर पर रहती है. मैं यहां गार्ड की नौकरी की तलाश में आया था. गागा ने मुझे चोर समझ कर कमरे में बंद कर दिया.''

थानेदार ने पहले डोडो को घास खाने को दी. फिर अपने साथी सिपाही को कीकू को बुलाने भेजा. कुछ

MAGAZINE KING

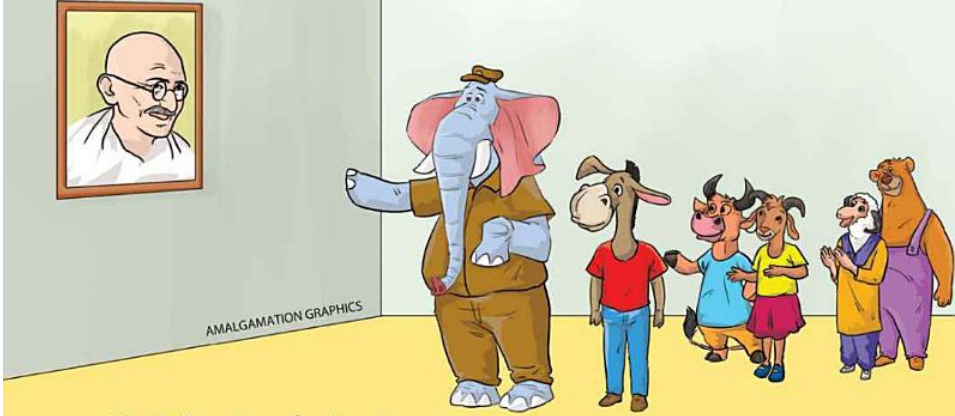

ही देर में कीकू वहां आ गई. थानेदार ने पूछा, "तुम इसे जानती हो?"

"हां, यह डोडो है. यह मेरे घर के पास रहता है."

"यह कहता है, तुम ने इसे काम के लिए यहां भेजा था," थानेदार बोला.

"हां, गागा को एक चौकीदार की जरूरत थी और डोडो को काम की तलाश थी. मैं ने इसे गागा से मिलने के लिए कहा था," कीकू ने उत्तर दिया.

"सुन लिया तुम सब ने. यह चोर नहीं है. डोडो सच कह रहा था. तुम में से किसी ने इस की बात का यकीन नहीं किया और एक निर्दोष को चोर समझ कर रातभर कमरे में बंद कर दिया," थानेदार ने बताया.

"बहुतबहुत धन्यवाद थानेदार. आप ने मुझे इस मुसीबत से उबार लिया," डोडो बोला.

गागा ने डोडो से माफी मांगी और बोली, "तुम चाहो तो मेरे यहां चौकीदारी कर सकते हो, लेकिन मैं तुम्हें ज्यादा मजदूरी नहीं दे सकती."

"मुझे तो बस गुजारे भर के लिए मजदूरी चाहिए. मेरी स्थिति ऐसी नहीं है कि मैं बहुत अधिक मेहनत कर सकूं. कुछ समय बाद अगर मेरी सेहत संभल गई तो मैं मेहनत करने से पीछे नहीं हटूंगा," डोडो ने कहा.

वहां से सब चले गए. थानेदार उन में सुलह करा कर वापस लौट रहा था. सिपाही ने पूछा, "आप ने तो गजब ही कर दिया साहब."

MAGAZINE KING

"गजब मैं ने नहीं गांधीजी के उस प्रसंग ने किया है जो मैं ने कुछ दिन पहले सुना था. उन्होंने एक चोर को इंसान होने का एहसास दिलाया था, जिस से सब शर्मिंदा हो गए थे और चोर को भी अपनी गलती का एहसास हो गया था.

"फिर क्या हुआ?"

"उस के बाद उस ने कभी चोरी न करने का प्रण लिया. यहां तो डोडो ने चोरी की भी नहीं थी. वह तो एक निरीह प्राणी था, जिसे सब चोरचोर कह कर पुकार रहे थे."

"आप ने कितने अच्छे ढंग से एक गधे को चोर बनने से बचा लिया साहब," थानेदार के न्याय से सारे वनवासी बहुत खुश थे, जिन्होंने डोडो को न्याय दिला दिया था. थानेदार मन ही मन गांधीजी को स्मरण कर रहा था जिन के आदर्श को अपना कर उस ने आज एक निर्दोष को दंड से बचा लिया था. ●

MAGAZINE KING

रास्ता बताओ

विश्व जल दिवस 22 मार्च को मनाया जाता है. प्लंबर की मदद कीजिए ताकि वह पानी का पाइप ठीक कर अपने घर लौट सके.

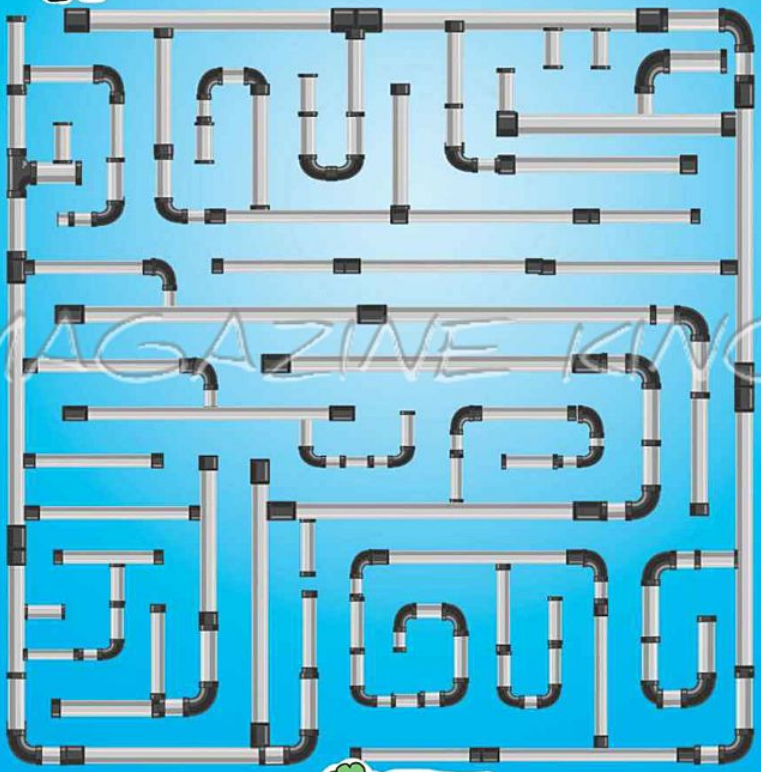

MAGAZINE KING

उत्तर: अंतिम पृष्ठ पर देखें.

पास ही पेड़ पर एक तोता बैठा था.
तुम क्यों खपा रहे हो अपना सिर, पेड़ पर चढ़ो, मुफ्त में फल खाओ और तुरंत खुश हो जाओ.
अरे, तोता भी हम से बढ़िया कविता पाठ कर रहा है.
हां, अगर हम भूखे रहे तो एक भी कविता नहीं लिख पाएंगे. चलो, कुछ फल खाते हैं.
वे पेड़ पर चढ़े और फल खाने लगे.
हमारा पेट तो पूरा भर गया. उम्मीद करते हैं कि अब हम एक कविता लिख पाएंगे.
तभी मीकू फिसल गया और उस की शर्ट एक डाल से अटक गई.
मैं झूल रहा हूं डाल से, कृपया बचा लो मुझे गिरने से.
अरे मीकू, तुम भी कविता वाले सुरताल में बोलने लगे हो.
मुझे कविता वाले शब्दों की फिक्र नहीं है. मैं नीचे गिर रहा हूं, प्लीज मुझे बचाओ.
थोड़ा रुको, इसी तरह लटके रहना.
चीकू ने पेड़ के नीचे सूखे पत्ते इकट्ठा कर ढेर लगा दिया.
कठफोड़वा भाई, क्या तुम अपनी चोंच से उस डाल को काट कर गिरा दोगे, जिस पर मेरा दोस्त लटका हुआ है.
हां, अभी काटता हूं.
कठफोड़वे ने अपनी चोंच से डाल को काट दिया और मीकू पत्तों के ढेर पर जा गिरा.
मीकू, तुम ठीक तो हो न? तुम्हें चोट तो नहीं लगी?
हां, मैं बिलकुल ठीक हूं.
मीकू फिसला, लगा झूलने, चीकू ने बचाया, नहीं दिया गिरने, लेकिन उन का दिमाग नहीं कर रहा था काम कौंधती, कविता से हुआ काम आसान.
अरे, वाह, क्या शानदार कविता बनी है.

बताओ तो जानें

1. मेरे बिना न स्वच्छ हवा
न लोगों की जिंदगी है
मेरे ही अंश से बनता
सुंदर व मनमोहक वातावरण.

2. हमेशा रहते हैं हम तैयार
तुम्हारी डिनर टेबल पर
मुझे तुम खापी नहीं सकते
पर खाओ बहुत बार.

3. कटोरे की तरह गोल हूं
टब की तरह हूं गहरा
पर पूरी दुनिया का पानी
मुझे भर नहीं पाता.

4. नदियां हैं पर पानी नहीं
जंगल हैं पर पेड़ नहीं
शहर हैं पर लोग नहीं
पहाड़ हैं पर पत्थर नहीं.

देखें तुम कितना जानते हो

1. हमारे शरीर का सब से संवेदनशील अंग कौन सा है?
क. कान
ख. दिल
ग. त्वचा
घ. आंख

2. कौन सी ज्यामितीय आकृति की 8 भुजाएं हैं?
क. वर्ग
ख. अष्टभुज
ग. आयत
घ. षडभुज

3. ठोस कार्बन डायऑक्साइड को ——————के रूप में भी जाना जाता है.
क. शुष्क बर्फ
ख. हाइड्रोजन
ग. हीलियम
घ. साल्ट

4. किस देश को केक की धरती के नाम से जाना जाता है?
क. आस्ट्रेलिया
ख. थाईलैंड
ग. जापान
घ. स्कौटलैंड

MAGAZINE KING

उत्तर (देखें तुम कितना जानते हो?) : 1. ग, 2. ख, 3. क, 4. घ.
उत्तर (बताओ तो जानें) : 1. पेड़, 2. प्लेट, कटोरी, चम्मच, 3. छलनी, 4. मानचित्र.

बिंदु मिलाओ

चित्र को पूरा करने के लिए अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं.

MAGAZINE KING

तरुण की परिवर्तनकारी यात्रा

कहानी ● वंदना गुप्ता

तरुण स्कूल से घर लौटा. उस ने रोज की तरह सोफे पर अपना बस्ता फेंका, पानी की बोतल और लंच बौक्स मेज पर लुढ़का दिए, जूतेजुराब इधरउधर उछाल दिए, बैल्ट और टाई फर्श पर फेंक दिए और खेलने दौड़ गया.

''यह लड़का सामान इस तरह फेंकता है, जैसे दोबारा इन की जरूरत ही नहीं पड़ेगी. कितना भी समझा लो कोई फर्क ही नहीं पड़ता, पता नहीं यह कब सुधरेगा,'' मां सामान संभालती हुई बड़बड़ा रही थीं.

अगले दिन सुबह मां ने तरुण को साफ और प्रैस की हुई यूनीफौर्म, पौलिश किए जूते पहना कर, स्कूल बैग में लंच बौक्स रख कर रोज की तरह स्कूल बस में बिठा दिया. तरुण का स्कूल थोड़ा दूर था. बस में उसे नींद आ गई. स्कूल कब आया तरुण को पता ही नहीं चला. बस कंडक्टर ने उसे जगाया, ''उठो, तरुण, सब बच्चे उतर कर स्कूल चले गए हैं, तुम सोते ही रह गए और लेट हो गए.''

तरुण हड़बड़ा कर उठा और बस से उतर कर स्कूल जाने लगा. तभी उस ने देखा कि उस का कुछ भी सामान वहां नहीं था. उस का बस्ता, बोतल सब इधरउधर बिखर गए थे. यहां तक कि उस की बैल्ट, जूतेजुराब भी कहीं दूर जा गिरे थे. वह नंगे पांव अपने सामान के पीछे दौड़ा.

'कहां जा रहे हो तुम सब, तुम्हारे बिना मैं स्कूल जा कर क्या करूंगा? बस्ते के बिना मैं अपना सामान कहां रखूंगा?' तरुण चिल्ला कर बोला.

'अगर तुम्हें मेरी इतनी जरूरत है तो मुझे संभाल कर क्यों नहीं रखते हो, जब देखो, मुझे जमीन में घसीटते

हुए ले जाते हो, यह नहीं सोचते कि कंकड़ों की रगड़ से मुझे दर्द होगा. मैं फट जाऊंगा. जब तुम मेरा ध्यान नहीं रख सकते तो मैं तुम्हारे साथ क्यों रहूं?' उस ने विनम्रता से कहा.

'तुम तो रुक जाओ, मुझे प्यास लगी है, मैं पानी कहां से पीऊंगा?' अब तरुण ने पानी की बोतल से खुशामद की.

'जब तुम मेरी स्ट्रैप पकड़ कर गोलगोल घुमाते हुए चलते हो, मुझे पेड़ों से टकराते हो, तब मुझ पर क्या बीतती है, मुझे कितनी चोट लगती है, कभी सोचा है तुम ने? और कल तो तुम ने हद ही कर दी. मुझे दीवार में दे मारा और मैं एक जगह से टूट भी गई, मुझे नहीं रहना तुम्हारे पास,' बोतल ने भी जवाब दे दिया.

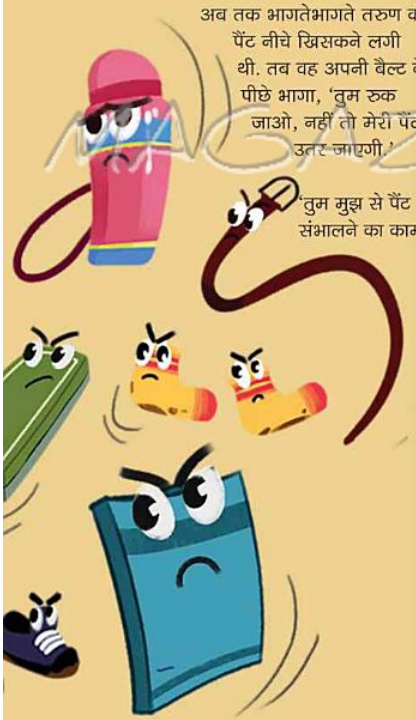

अब तक भागतेभागते तरुण की पैंट नीचे खिसकने लगी थी. तब वह अपनी बैल्ट के पीछे भागा, 'तुम रुक जाओ, नहीं तो मेरी पैंट उतर जाएगी.'

'तुम मुझ से पैंट संभालने का काम

लेते कब हो, मुझे उतार कर हंटर की तरह घुमाते हो और अपने दोस्तों को मारते हो. इसलिए मैं भी तुम से नाराज हूं और तुम्हें छोड़ कर जा रही हूं,' बैल्ट बोली.

तरुण के पांव में दौड़तेदौड़ते कंकड़पत्थर चुभ रहे थे और बहुत दर्द हो रहा था. 'अरे, जूतेजुराबो, तुम मुझ से दूर कहां जा रहे हो? मैं तुम्हारे बिना नहीं चल सकता,' तरुण चिल्लाया.

'आप हमारे साथ बुरा व्यवहार करते हो,' जूतों ने कहा. 'तुम ने कभी हमारा ध्यान रखा? कभी पौलिश कर के हमें चमकाया? हमें घर जा कर एक स्थान पर भी नहीं रखते हो.'

'एक जूता एक कोने में उछाल देते हो और दूसरा दूसरे में. उस दिन तो तुम कीचड़ में छपाक से कूदे, जब कीचड़ उछली तो तुम कितने खुश हुए. तुम ने यह भी नहीं सोचा कि हम जब गंदे हो गए तो हम पर क्या बीती,' जूते गुस्से में बोले.

'हां, हम भी गंदे हो गए. हम से बदबू आने लगी. तब भी तुम ने हमें धोया नहीं,' जुराबों ने भी जूतों की हां में हां मिलाई.

MAGAZINE KING

तरुण की हालत देखने लायक थी. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे. उसे रोना आ रहा था. इस तरह वह स्कूल कैसे जाएगा, वहां पढ़ाई कैसे करेगा?

तभी उसे अपनी कौपीकिताबों का ध्यान आया. उस ने रोते हुए उन से कहा, 'प्लीज, तुम तो आ जाओ, जिस से मैं स्कूल जा कर पढ़लिख सकूं.'

'सवाल ही नहीं पैदा होता,' सब तरुण से नाराज थे.

'हमें बस्ते में रखते समय तुम इस तरह ठूंसते हो कि हमारे कोने मुड़ जाते हैं, कवर फट जाते हैं. हमारे पन्ने फाड़फाड़ कर तुम बोट और एरोप्लेन बनाते हो. आज से हम भी तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे.'

‘हमारे अंदर बनी तस्वीरों में रंग भरभर कर तुम उन्हें खराब भी करते हो,’ किताबों को ये भी शिकायत थी.

अब तरुण को अपने पैंसिल बौक्स की याद आई. उस ने उस से विनती की, ‘तुम्हीं मेरे पास आ जाओ, ताकि मैं किसी से पेपर मांग कर जो टीचर पढ़ाएंगे उसे लिख तो पाऊंगा.’

‘मेरी तरफ तो तुम देखना भी मत, सब से बुरा हाल तो तुम ने मेरे अंदर रखे सामान का ही किया है. पैंसिल को गड़ागड़ा कर चलाते हो, तोड़ते हो फिर बारबार शार्पनर से बनाते हो और रोज खत्म कर देते हो.’

‘स्केल को मेज पर रख कर उस के एक कोने में इरेजर रख कर दूसरे पर जोर से हाथ मारते हो, जिस से इरेजर उछल कर कभी पंखे से टकराता है तो कभी मेजकुर्सियों के नीचे खो जाता है. कभीकभी स्केल टूट भी जाता है. मैं ऐसे बच्चे के साथ रहना पसंद करूंगा, जो मुझे संभाल कर रखे और प्यार से हमारी देखभाल करे,’ पैंसिल बौक्स ने स्पष्ट किया.

अब तरुण भागताभागता थक गया था. वह सिर पर हाथ रख कर जमीन पर बैठे गया, ‘क्या करे, कहां जाए?’ तभी उसे याद आया कि उस दिन आर्ट के पीरियड में टैस्ट है. उस ने क्लास का सीन बनाने की प्रैक्टिस भी की थी. उस ने एक बार फिर कोशिश की और अपने क्रेयोन्स के डब्बे की खुशामद की, ‘कम से कम तुम तो मेरा साथ मत छोड़ो.’

‘देखो तरुण, हमारे साथ भी तुम्हारा बरताव बहुत बुरा है. सब से पहले तो तुम हमारा बाहरी कागज उतार कर हमें बेरौनक कर देते हो. इसलिए हम भी तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहते,’ क्रेयोन्स का भी वही जवाब था.

परेशान हो कर तरुण रोतेरोते सब से माफी मांगने लगा, ‘एक बार मुझे माफ कर दो, मैं वादा करता हूं कि अब तुम सब को बहुत संभाल कर रखूंगा. कभी शिकायत का मौका नहीं दूंगा. बस, इस बार मेरे पास लौट आओ.’

‘‘किसे बुला रहे हो, क्या संभाल कर रखोगे? स्कूल आ गया जल्दी बस से उतरो,’’ कंडक्टर ने उसे हिला कर जगाया.

यह सोच कर तरुण बस से नीचे कूदा. ‘तो यह सपना था. अगर यह सच हो गया तो?’ उस दिन के बाद तरुण ने उन की बातों का ध्यान रखा. मन ही मन तय किया वह उन की देखभाल अच्छी तरह से करेगा. उस दिन से तरुण बिलकुल बदल गया. वह उन से मन ही मन पूछता है, ‘अब तो खुश हो ना, मुझे छोड़ कर कहीं जाओगे तो नहीं?’ ●

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें

MAGAZINE KING

लालच बुरी बला

कहानी ● इंद्रजीत कौशिक

श्यामा ने दूध वाले से दूध ले कर दूध से भरा भगौना किचन की टेबल पर रख दिया. किटी बिल्ली इसी मौके की ताक में थी. उसे जोरों की भूख लगी थी.

श्यामा किसी काम से जैसे ही किचन से बाहर निकली, किटी टेबल में जंप मार कर दूध के भगौने के पास पहुंची. अभी उस ने मुंह डाला ही था कि श्यामा लौट आई.

किटी को दूध पीते देख श्यामा को गुस्सा आ गया, ''ठहर जा, अभी तुझे मजा चखाती हूं,'' वह चिल्लाई और फर्श से मोटा सा डंडा हाथ में उठा लिया.

''हाय, मैं मरी,'' डंडा देख किटी की सांसें थम गईं. उसे लगा आज वह बचेगी नहीं.

MAGAZINE KING

उस के बाद श्यामा जोर से चीखी. किटी ने आंखें खोलीं तो देखा चूहे ने उस के पांव में जोर से काट लिया था. श्यामा ने डंडा छोड़ दिया और पैर पकड़ कर चीखते हुए फर्श पर बैठ गई.

इस दौरान, किटी और चूहे को कमरे से भागने का मौका मिल गया. ''धन्यवाद चूहे, तुम यदि समय पर न आते तो आज मैं मारी जाती,'' किटी ने चूहे से कहा, ''आज से तुम मेरे दोस्त हुए. मेरा भोजन होने के बावजूद मैं तुम्हें कभी नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी, यह मेरा वादा है.''

इस घटना के बाद किटी सावधान रहने लगी थी. वह नजर बचा कर फ्रिज का दरवाजा खोलती और वहां रखी दूधमलाई से अपना पेट भर लेती. मौका मिलता तो थोड़ा मक्खन चूहे के लिए भी ले जाती.

''धन्यवाद किटी, तुम कितनी अच्छी हो, जो मेरा इतना खयाल रखती हो,'' चूहा पेट भरने के बाद कहता.

''कभी लालच मत करना वरना लेने के देने पड़ जाएंगे. जितना लाती हूं खा लिया करो,'' किटी बोली.

एक दिन चूहा किचन में था उस ने किटी को फ्रिज के भीतर जा कर दूधमलाई खाते देख लिया तो उस का भी मन ललचा गया.

'किटी खुद तो दूधमलाई खाती है, पर मेरे लिए जरा सा खाना ही लाती है. आज के बाद मैं भी खुद फ्रिज के अंदर जा कर मनपसंद चीजें खाया करूंगा,'

चूहे ने मन ही मन सोचा.

चूहे को फ्रिज के आसपास चक्कर लगाते देख किटी समझ गई कि वह भीतर घुसने की फिराक में है और पकवान खाना चाहता है.

''सुनो चूहे, तुम किसी मुसीबत में न पड़ जाओ, इसलिए बता रही हूं कि जरा संभल कर रहना. फ्रिज खुला देख कर ही भीतर घुसना और चौकन्ना हो कर थोड़ा सा चख कर बाहर जल्दी निकल जाना,'' किटी ने उसे समझाया.

''थोड़ा सा क्यों?'' चूहे ने पूछा.

''इसलिए कि यदि फ्रिज का दरवाजा बंद हो गया तो फिर तुम्हारा बाहर निकलना मुश्किल हो जाएगा और भीतर की ठंड तुम्हें जमा कर रख देगी,'' किटी ने समझाया, लेकिन चूहे के सिर पर तो खाने का भूत सवार था.

अगले दिन श्यामा फ्रिज से सामान निकाल कर दरवाजा खुला छोड़ कर किचन में चली गई तो पीछे से मौका पा कर चूहा फ्रिज में जा घुसा, 'वाह, खाने के लिए इतनी सारी चीजें,' दूध, दही, मलाई, मिठाई और केक देख कर उस के मुंह में पानी आ गया,

'बाहर इतनी गरमी पर यहां कितनी ठंडक है,' सोच कर वह खुश हो गया.

खाने के लालच में वह किटी द्वारा दी गई चेतावनी भी भूल गया कि फ्रिज में बंद हो गया तो लेने के देने पड़ सकते हैं. वही हुआ, श्यामा ने दही रखा और फ्रिज बंद कर दिया. चूहा फ्रिज के अंदर धीरेधीर ठंड महसूस करने लगा.

'अरे, कोई मुझे बाहर निकालो. दरवाजा खोलो वरना इतनी ठंड में मेरी तो जान ही निकल जाएगी,' चूहा बहुत चीखाचिल्लाया पर उस की आवाज फ्रिज से बाहर नहीं पहुंची.

उधर, किटी को जब बहुत देर तक चूहा कहीं नजर नहीं आया तो किटी समझ गई कि चूहा जरूर किसी मुसीबत में फंस गया है.

किटी ने पूरा घर छान मारा, पर वह कहीं नहीं मिला. ''चूहे, कहीं तुम भीतर तो बंद नहीं हो गए?'' किटी ने फ्रिज के पास जा कर तेज आवाज में पूछा.

''मुझे जल्दी यहां से बाहर निकालो किटी. अंदर ठंड के मारे मेरी तो कंपकंपी छूट रही है,'' फ्रिज के अंदर से एक मरीमरी सी आवाज आई,

MAGAZINE

छिपे चित्र ढूंढ़ें

13 मार्च को विश्व निद्रा दिवस मनाया जाता है. इस चित्र में उन्हें ढूंढ़ें जो सो रहे हैं.

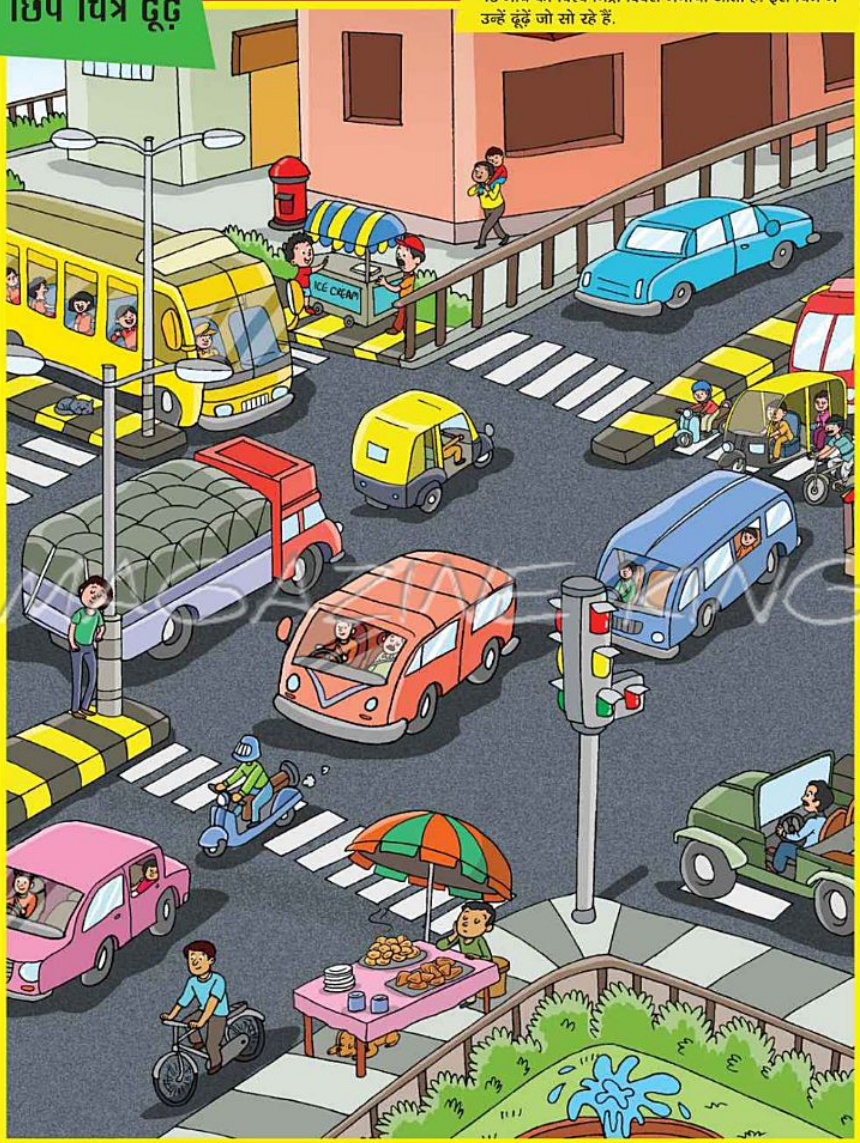

उत्तर: अंतिम पृष्ठ पर देखें.

''मैं ने तुम्हें कितना समझाया था, पर तुम ने वही गलती की जिस का मुझे डर था,'' किटी बोली, ''अब भुगतो अपने किए की सजा.''

''मुझे माफ कर दो, मैं अपनी गलती मानता हूं. प्लीज, कुछ करो, नहीं तो मैं जिंदा नहीं बचूंगा,'' चूहा गिड़गिड़ाने लगा तो किटी को उस पर दया आ गई.

'एक दिन मुसीबत के समय चूहे ने मुझे बचाया था, आज जब यह संकट में है तो मुझे कुछ करना ही होगा,' किटी सोचने लगी.

पर यह इतना आसान काम नहीं था. किटी से फ्रिज का दरवाजा बहुत कोशिश करने पर भी नहीं खुला. इस के बावजूद उस ने हिम्मत नहीं हारी.

तभी उस के कानों में घंटी की आवाज पड़ी. किटी समझ गई कि दादी पूजा करने बैठी होंगी. उस के दिमाग में एक बात आई.

मंदिर में दीपक जल रहा था. किटी ने कुछ सोच कर एक बड़ा सा कागज दीपक से जला दिया. कागज जला तो उस का धुआं दादी की आंखों में जाने लगा.

''श्यामा, धुंए से मेरी आंखें जल रही हैं. जा फ्रिज में रखा गुलाबजल ले आ और उस की कुछ बूंदें मेरी आंखों में डाल दे, शायद उस से जलन कुछ कम हो जाए,'' दादी की आवाज सुन कर श्यामा अपनी जगह से उठी तो किटी को कुछ आस बंधी.

''चूहे, जब फ्रिज का दरवाजा खुलेगा, तो तू चौकन्ना रहना और फ्रिज का दरवाजा खुलते ही झटपट फ्रिज से बाहर कूद जाना. यह मौका चूक गए तो फिर मुझे दोष मत देना,'' किटी भाग कर फ्रिज के पास गई और चूहे से बोली.

चूहे को मनचाही मुराद मिल गई. श्यामा ने जैसे ही फ्रिज खोला वह तपाक से बाहर आ गया. किटी ने उसे मुंह में दबाया और अधमरे से हो रहे चूहे को पीछे के कमरे में रखी रजाई के भीतर घुसा दिया ताकि उसे कुछ राहत मिल सके.

रजाई की गरमी पा कर चूहे की जान में जान आई. कुछ देर बाद जब उस की तबीयत ठीक हुई तो उस ने किटी का दिल से शुक्रिया अदा किया, ''किटी, मैं बहुत शर्मिंदा हूं. तुम्हारे समझाने के बावजूद स्वाद के लालच में पड़ कर मैं मरतेमरते बचा हूं. वह तो समय रहते तुम ने सूझबूझ दिखा कर मुझे बचा लिया वरना आज न जाने क्या हो जाता.''

''बीती बातों को भूल जाओ दोस्त और आज से जिंदगी की नई शुरुआत करो. मुझे विश्वास है कि आइंदा तुम ऐसा कोई काम नहीं करोगे जिसे कर के तुम्हें बाद में पछताना पड़े. किटी ने कहा तो चूहा मुसकरा दिया.''

MAGAZINE KING

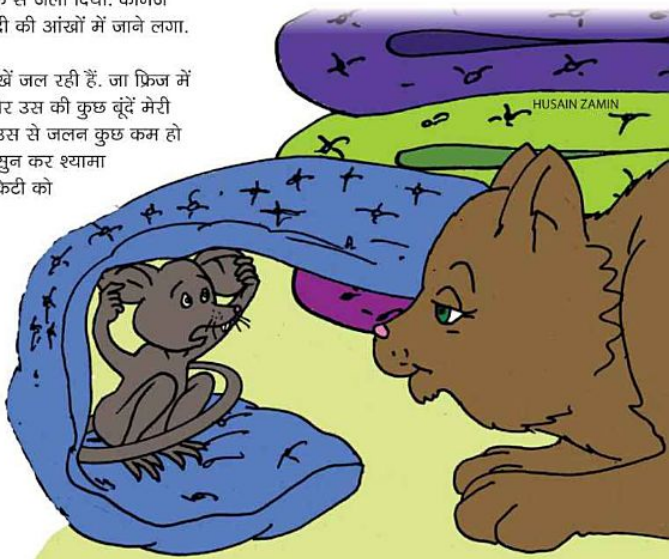

पौपअप फ्लावर कार्ड

स्मार्ट

20 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय सुखशांति दिवस है. सुखशांति फैलाने के लिए इस कार्ड को बनाएं.

आप को चाहिए :

सफेद कार्ड शीट, रंगीन चार्ट पेपर, गोंद और कैंची.

ऐसे बनाएं :

MAGAZINE KING

1. चार्ट पेपर का एक टुकड़ा लें और उसे एक वर्ग के आकार में मोड़ें. उस वर्ग को फिर त्रिभुज के आकार में मोड़ें.

2. त्रिभुज पर पंखड़ी का डिजाइन बना लें और इसे डिजाइन अनुसार काट लें.

3. पेपर को खोलें. वह एक फूल के आकार में दिखेगा.

4. इसी तरह चरण 1 से 3 तक की प्रक्रिया को कर के देखें, अलगअलग रंगों और आकार के फूल बनाएं.

5. तल पर सब से बड़े फूल को चिपका दें और इस के ऊपर फिर इस से थोड़े छोटे और इसी क्रम में अन्य फूलों को चिपका दें.

6. जब गोंद सूख जाए तो फूल को कार्ड शीट के बीच में चिपका दें.

7. किनारे पर पत्ते लगा कर कार्ड को सजा लें.

MAGAZINE KING

आप का कार्ड बन कर तैयार है. अपना संदेश इस पर लिखें और अपने प्रियजनों को भेट करें.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि
writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.

रंग बदलता गिरगिट

कहानी ● डा. तारा निगम

मटकू गिरगिट और चंचल गिलहरी दोनों एक घने आम के पेड़ की डाल पर बैठे थे. एक ही पेड़ पर रहने के कारण दोनों अच्छे दोस्त थे.

एक दिन वे दोनों बातें कर रहे थे, तभी कुछ बच्चे आम तोड़ने के इरादे से पेड़ के नीचे आए और डाल पर पत्थर फेंकने लगे. वे आमों पर निशाना साध रहे थे.

बच्चों के पत्थर फेंकते ही मटकू ने तुरंत अपना रंग बदला और घनी शाखा के रंग का हो कर वहां बैठ कर डाल से चिपक गया. चंचल दौड़ कर ऊपर वाली शाखा पर चली गई. थोड़ी देर बाद जब बच्चे वहां से चले गए तो चंचल नीचे आ गई. वह मटकू का रंग देख कर चौंक गई. वह बोली, ''मटकू, तुम तो जादूगर लगते हो, कुछ देर पहले तो तुम्हारा रंग गुलाबी था, अचानक तुम काले कैसे हो गए?''

''चंचल, हम गिरगिट खतरे का अहसास होते ही अपना रंग बदल कर दुश्मन को धोखा देते हैं और अपना बचाव करते हैं. यह डाल जिस पर मैं बैठा था. इस का रंग गहरा है. यदि मैं इस पर पहले जैसा गुलाबी ही बैठा रहता तो बच्चों को

दिख जाता. वे आम के साथ मुझे भी पत्थर मारते. तुम तो बच्चों की आदत जानती ही हो.''

''हां मटकू, अकसर बच्चे मुझे पत्थर मार कर भाग जाते हैं. तुम ने तो कमाल ही कर दिया. कैसे कर लेते हो ये सब?'' चंचल ने पूछा.

मटकू मुसकराया और बोला, ''यह मेरे जादू का कमाल है.''

''मुझे भी अपना जादू सिखा दो न मटकू,'' चंचल ने उस से आग्रह किया.

''मैं तुम्हें सिखा तो दूंगा, पर मेरी एक शर्त है,'' मटकू चालाकी से बोला.

''कैसी शर्त,'' बोलो मैं पूरी करूंगी.

''तुम्हें मुझे रंग बदलना सिखाने का मेहनताना देना पड़ेगा,'' मटकू ने कहा. ''तुम्हें रोज दोनों समय मुझे ताजे फल ला कर खिलाने पड़ेंगे.''

''मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है. मैं तुम्हें रोज ताजे फल खिलाऊंगी, लेकिन वैसे आप को सीखने में समय कितना लग जाएगा,'' चंचल ने पूछा.

मटकू बोला, ''वैसे तो काफी समय लगता है, पर तुम मेरी दोस्त हो इसलिए मैं तुम्हें एक साल में ही सिखा दूंगा. हम कल से ही अपना यह काम शुरू कर देंगे, बस तुम मेरी शर्त याद रखना.''

''हां, मुझे याद है. मैं रोज सुबह ही ताजे फल ले आऊंगी, कल से इस काम को शुरू करते हैं,'' चंचल बोली.

दूसरे दिन से चंचल मटकू के लिए नियम से फल लाने लगी. वह कभी बेर, अमरूद और आम रोज बदलबदल कर फल लाती. मटकू हर दिन फल खाता और चंचल से बातें करता.

एक दिन मटकू ने सेब खाने की बात कही, ''लेकिन मटकू, सेब का बगीचा यहां से काफी दूर है, मैं सेब कैसे लाऊंगी?'' चंचल ने पूछा.

''चंचल, यदि रंग बदलना सीखना है, तो तुम्हें सेब लाने ही होंगे वरना रहने दो,'' मटकू व्यंग्य से बोला.

''ठीक है, मैं कल सेब ले लाऊंगी,'' चंचल बोली. वह दूसरे दिन दौड़ती हुई सेब के बाग में पहुंची, लेकिन दौड़ने से वह काफी थक गई थी और जैसे ही उस ने पेड़ पर चढ़ कर सेब तोड़ने चाहे. वह धड़ाम से नीचे गिर गई और उस के पैर में चोट लग गई.

चंचल को कराहते देख भोला बंदर उस के पास आया और उस के पैर में लगी चोट देख कर बोला, ''चंचल, तुम तो पेड़ पर लगे फल भी खा लेती हो, फिर पेड़ से तोड़ने की क्या जरूरत थी और इतनी दूर से सेब खाने तुम यहां क्यों आई हो, जानती हो जंगल में कदमकदम पर खतरा है.''

''मैं इन्हें अपने लिए नहीं तोड़ रही हूं, यह तो मैं मटकू के लिए ले जा रही हूं,'' चंचल बोली.

''यदि उसे सेब खाने हैं तो वह खुद यहां क्यों नहीं आया?'' भोला ने पूछा.

''असल बात यह है भोला मटकू ने मुझ से वादा किया है कि वह मुझे अपनी तरह रंग बदलना सिखाएगा. उस के बदले में मुझे उसे फल खिलाने होंगे. आज उसे सेब चाहिए.''

भोला समझ गया कि मटकू चंचल को बेवकूफ बना रहा है. उस ने सोचा कि मटकू को सबक सिखाना चाहिए.

वह चंचल से बोला, ''मैं तुम्हें सेब तोड़ कर देता हूं और कुछ सेब मैं भी ले लेता हूं ताकि यह दे कर मैं भी मटकू से रंग बदलना सीख लूंगा. तुम्हारे पैर में चोट लगी है, इसलिए तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ. मैं तुम्हें ले चलता हूं. दोनों मटकू के पास पहुंच गए भोला आम के पेड़ पर चढ़ गया और सेब मटकू के सामने रख दिए.

''मटकू, क्या तुम मुझे भी रंग बदलना सिखा दोगे.'' भोला ने पूछा.

''हां, चंचल के साथ तुम भी रंग बदलना सीखा करो,'' वह मन ही मन सोच रहा था कि चलो, दूसरा बुद्धू भी फंस गया.

''अच्छा, तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुम ऐसा सिखा सकते हो?'' भोला ने पूछा.

''हां, सिखा सकता हूं,'' मटकू बोला.

भोला ने मटकू की पूंछ पकड़ कर उसे उलटा लटका दिया और बोला, ''अब कहो, क्या सचमुच तुम रंग बदलना सिखा सकते हो?''

''ये क्या मजाक है भोला,'' मटकू चिल्लाया.

भोला ने कहा, ''सचसच बोलो वरना तुम्हें यहीं से दूर पत्थर पर पटकता हूं,'' उस ने मटकू को गोलगोल घुमाया.

''नहींनहीं, कृपया ऐसा मत करना वरना मैं मर जाऊंगा. मैं तो चंचल को बेवकूफ बना कर उस से फल मंगाने के लिए ऐसा कर रहा था. मेरे शरीर में त्वचा के नीचे कुछ कोशिकाएं हैं जिन की मदद से मैं रंग बदल सकता हूं, पर और कोई प्राणी इन कोशिकाओं के बिना यह काम नहीं कर सकता है.''

''इस का मतलब तुम अपनी ही दोस्त से धोखा कर रहे थे. उस की अज्ञानता का फायदा उठा रहे हो. तुरंत चंचल से माफी मांगो,'' भोला बोला.

''चंचल, कृपया मुझे माफ कर दो, मैं ने तुम्हारे साथ धोखा किया है,'' मटकू ने कहा.

चंचल बोली, ''इसे छोड़ दो. यह मेरा दोस्त है और इसे अपनी गलती का एहसास हो गया है.''

''गलती तो मेरी भी है, लेकिन मुझे इस बात का ज्ञान नहीं था.''

भोला ने कहा, ''तुम कहती हो, तो मैं इसे छोड़ देता हूं और तुम्हें भी एक सीख देता हूं. ये याद रखो कि हमें जैसा रूपरंग मिला है उस में हेरफेर करना अपने बस में नहीं है. आइंदा ऐसा कभी मत करना.'' ●

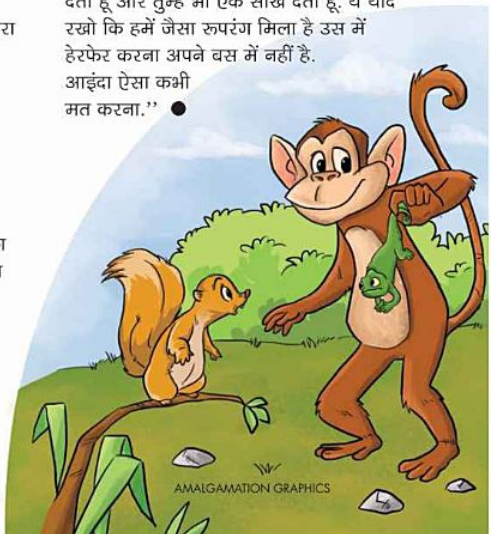

MAGAZINE KING

विश्व गौरैया दिवस

20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है. चीची गौरैया आप के सामान्यज्ञान की परख करना चाहती है. शब्द बैंक से सही शब्दों को चुन कर खाली स्थान को भरें और सही उत्तर दें.

1. हैलो, मैं चीची गौरैया हूं. आप मुझे नगर और शहरों में देख सकते हैं. मैं मनुष्य के आसपास ही रहती हूं. मैं अधिकतर देशों में पाई जाती हूं, सिर्फ .....और .....को छोड़ कर.

2. मैं..... राज्य की राजकीय चिड़िया घोषित की गई थी.

3. मैं..... और ..... खाती हूं.

4. मैं..... या ..... में अपना घोंसला बनाती हूं.

5. ..... और ..... जैसे अन्य कारणों से मेरा और मेरे दोस्तों का अस्तित्व विलुप्त होने की कगार पर है.

6. आप..... और ..... हमारी सुरक्षा में मदद कर सकते हैं.

शब्द बैंक

चीन, आप के घरों के बाहर झूलते कृत्रिम घोंसले, सरसफल, अंटार्कटिका, प्रदूषण, पतंगा, छोटे कीड़े, बीज, छत, पेड़ के कोटर, पेड़ों की कमी, पुल, घरों के बाहर एक बरतन में पानी और अनाज के दाने रखना, नई दिल्ली, जापान, अधिक से अधिक पेड़ लगाना.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

नंबर प्लेट

कहानी ● ओमप्रकाश क्षत्रिय

निराली कार पहली बार होटल आई थी. वहां बहुत सारी कारें खड़ी थीं. उस ने चारों तरफ अपनी जैसी कारें देखीं. वह बड़ी खुश हुई. वह मन ही मन सोचने लगी कि इन से वह खूब बातें करेगी. मगर तभी वहां एक सुंदर सजीली कार आ गई. उसे देख कर निराली को अचरज हुआ. वह बोली, ''हैलो, मेरा नाम निराली है.''

''हाय, मैं डौली हूं,'' दूसरी कार ने कहा.

''तुम बहुत खूबसूरत हो,'' निराली ने कहा. अन्य कारें भी उस से सहमत हुईं. प्रशंसा होने पर डौली खुश हो गई.

अचानक निराली ने देखा कि डौली की नंबर प्लेट लाल रंग की थी. निराली ने अपनी नंबर प्लेट देखी तो वह काले रंग की थी और उस पर पीले रंग से नंबर लिखे हुए थे. इस का मतलब यह था कि वह होटल के विशेष मेहमानों की कार है, मगर लाल रंग की प्लेट का मतलब क्या था?

निराली अभीअभी फैक्टरी से बन कर आई है, वह यह सब नहीं जानती थी. इसलिए उस ने पूछा, ''डौली, तुम्हारी नंबर प्लेट लाल रंग की है, जिस पर सफेद रंग से नंबर लिखे हैं, ऐसा क्यों है? ''

''अरे हां, मैं ने तो कभी इस तरफ देखा ही नहीं,'' डौली ने निराली की नंबर प्लेट देख कर कहा, ''तुम्हारी काली प्लेट पर पीले रंग से लिखा हुआ है?''

''हां,'' निराली बोली, ''मेरी नंबर प्लेट का मतलब है कि मैं इस होटल की खास कार हूं और महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को लाती ले जाती हूं. मगर तुम्हारी लाल प्लेट का क्या राज है?''

''मैं राष्ट्रपति और राज्यपाल जैसे विशिष्ट व्यक्तियों की कार हूं. इस पर यह स्वर्णिम अशोक स्तंभ देख रहे हो न, यह मेरे सरकारी गाड़ी होने का निशान है. मैं अतिविशिष्ट व्यक्तियों को ले जाती हूं,''

''ओह, यह तो बहुत बढ़िया बात है. इस बारे में तो मैं जानती ही नहीं थी,'' वहां खड़ी एक सफेद कार ने कहा.

डौली और निराली ने उधर देखा. उस की प्लेट सफेद नंबर की थी, जिस पर काले रंग से नंबर लिखे हुए थे.

''तुम कौन हो?'' डौली ने उस से पूछा.

सफेद कार ने जवाब दिया, ''मेरा नाम सिमी है. मैं निजी लोगों की कार हूं. मेरी सफेद रंग की प्लेट पर काले रंग के नंबर लिखे होते हैं.''

''हां, यह तो मुझे मालूम है,'' वहां खड़ा ट्रक बोला, जिस पर लिखा था, 'टिनी हाथी.' उस में से खाने का सामान उतारा जा रहा था. वह बोला, ''मेरी नंबर प्लेट देखिए, यह पीले रंग की है और इस पर काले रंग के नंबर लिखे हुए हैं यानी मैं एक व्यावसायिक वाहन हूं.''

''मैं समझ गई,'' निराली बोली, ''तुम एक ऐसा वाहन हो, जिस में कोई भी किराए का सामान ला ले जा सकता है.''

''हां,'' टिनी ने कहा.

तभी निराली का ड्राइवर आ गया. उसे किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को ले जाना था. ''बहुत अच्छा दोस्तो, मुझे जाना है. बाद में मिलते हैं,'' कहते हुए निराली चली गई. बाकी सभी कारें लगातार एकदूसरे के कारनामों के बारे में बातें करने लगीं.●

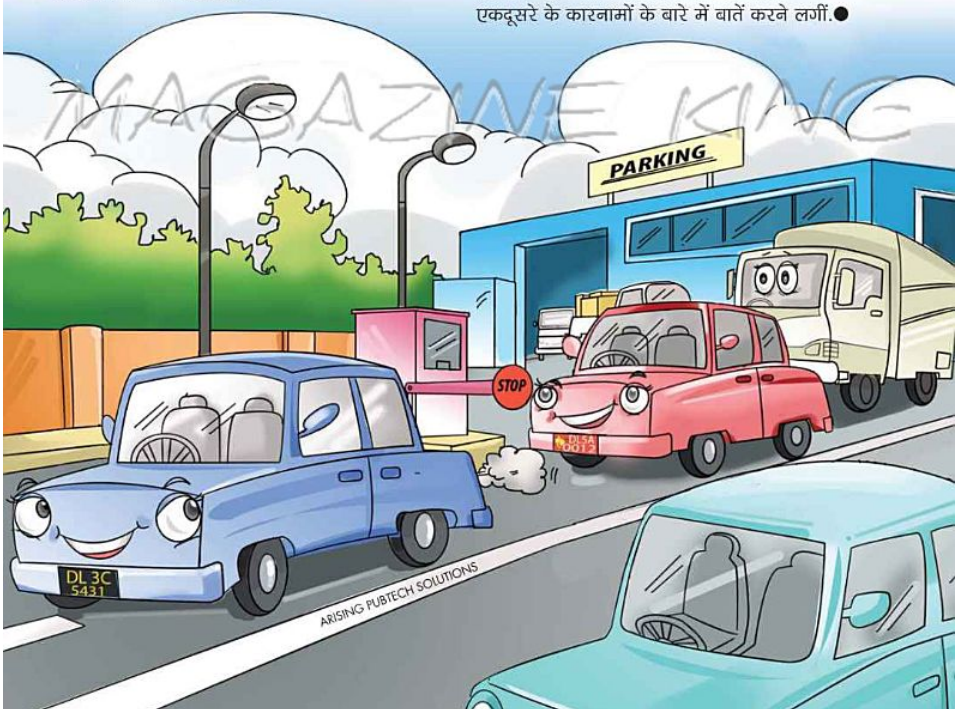

नन्हीं कलम से

भार्वी नायक, 12 वर्ष
नई दिल्ली

मेरा बगीचा

हमारा बगीचा फूलों और पौधों से भरा है. चारों तरफ मधुमक्खियों की भिनभिनाहट गूंजती है. अगर यह जानने के लिए कि आम के पेड़ की जड़ें कितनी गहराई तक हैं, उसे काट दोगे तो कभी जान नहीं पाओगे. मैं टारटैर के धनुष के साथ उड़ सकता हूं और बीजों को बिखेर सकता हूं. मटरगश्ती के भी अपने मजे हैं. बेलें अंगूरों से लदी हुई हैं. मुझे वहां जाना पसंद है, जहां शतावरी मसालों के साथ नाचती है. हरी मिर्च तो काफी तेज है, बैगन के बैगनी रंग का क्या कहना. लाललाल टमाटर में आलू मिला कर तरी बना लो. फूल तुम्हारे रास्ते में लहलहा रहे हैं. बसंत की हवा उन्हें दुलारती है. तोते उड़ते हैं और दाने खाते हैं. शहद चमकता है, गन्ना भी इसी तरह चमक रहा है. हालांकि यह एक गुप्त बगीचा है. लेकिन आप के लिए ढूंढ़ना कठिन नहीं है. यह एक ऐसी जगह है, जो आप को मोहित कर लेगी. हां, आप इसे बहुत पसंद करोगे. मैं ने इसे खुद ही बड़ा किया है, धन्यवाद.

अनुषा शुक्ला, 10 वर्ष
जबलपुर

दान्या कुरैशी , 9 वर्ष
राजस्थान

आप की अनुपस्थिति

कुछ बातें मैं आप को कभी नहीं बताऊंगी, क्योंकि आप मुझ पर वैसा नहीं मुसकराती जैसा मैं मुसकराती हूं. मुसकान तो अब टिकती ही नहीं है, वह मुरझा गई है. मेरे दिल और दिमाग से दूर चली गई है. मैं ने अपना ध्यान और सारी चमक खो दी है. कभी मैं डर जाती हूं, कभी सहन कर लेती हूं. कभी आप को खोने के बारे में सोचा न था. आप ने मुझे कतार में छोड़ दिया है. आप की अनुपस्थिति एक नई तरह की है. मुसकान कोई भी नया दरवाजा नहीं खोलेगी. मेरा प्यार खो गया, मेरी मुसकान खो गई, मेरी चमक खो गई है. जो कुछ भी मुझे आप से कहना था और आप को महसूस कराना था वह यह है कि कुछ चीजें ऐसी हैं, जिसे मैं आप को कभी नहीं बता सकती, क्योंकि आप उस तरह मुझ पर नहीं मुसकराती हो, जैसी मैं मुसकराती हूं.

आतिका मरियम शम्मी, 13 वर्ष
दिल्ली

एम. मसानामुथु , 12 वर्ष
वालपराई

MAGAZINE

सानु किस्कु, 12 वर्ष
बिहार

विश्व रेडियो दिवस

बच्चो, खुशी मनाओ, विश्व रेडियो दिवस की खुशियां मनाओ. सुनो और सुनाओ, देखो और दिखाओ, खुशी से रेडियो के प्रोग्राम सुनो. रेडियो की धुन सुनो, सिर्फ सुनो. उठो और नाचो, खुशी मनाओ, रेडियो दिवस की खुशी मनाओ.

अलंकृता राज, 10 वर्ष
बिहार

मेरा नया पिल्ला

आलुओं के शहर में भालू का एक परिवार रहता था. परिवार में मातापिता और भाईबहन थे. वे एकसाथ खुशी से रहते थे. मम्मी, भाई और बहन ताजे अंडे लाने के लिए एक फार्म पर गए. जब वे फार्म पर पहुंचे तो भाई ने अंडे लाने के लिए एक बोर्ड देखा और बोला, ''फार्म के साइनबोर्ड लिखा है कि इस के पास बिक्री के लिए पिल्ले हैं. क्या हम पिल्ले देख लें,'' मां ने कहा, ''हम यहां अंडे लेने आए हैं, पिल्ला नहीं. हमें अंडे खरीद कर घर चलना चाहिए. लेकिन भाईबहन ने फिर कहा, ''मम्मी, प्लीज, हमें एक पिल्ला चाहिए. कम से कम हम देख तो सकते हैं? प्लीज, प्लीज, प्लीज.'' मम्मी ने कहा, ''पिल्ला खिलौना नहीं है, यह हमारी तरह ही होता है. हमें उसे साफ रखना होगा और हमेशा उस का खयाल रखना होगा. यह एक बड़ी जिम्मेदारी होगी,'' बच्चों ने कहा, ''हां, हम पिल्ले का खयाल रखेंगे.'' अंत में मम्मी मान गईं. उन्होंने 12 अंडे खरीदे और फिर पिल्ले देखने गए. वे खुशीखुशी घर लौट आए. पिल्ले का नाम गिंगो रखा गया. घर आ कर वे दौड़ते हुए पापा के पास गए और बोले, ''हम फार्म पर अंडे खरीदने गए थे और साथ ही एक पिल्ला भी ले आए,'' सब खुश थे.

के. सुहास प्रतीक, 11 वर्ष
बेल्लमपल्ली

MAGAZINEKING

यह मिनी ड्रायर बौक्स है. इसे हमारी 12 वर्षीय पाठिका स्वस्तिका सैमी ने जयपुर से भेजा है.

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उस, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

दादाजी और विश्व निद्रा दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

रिया और राहुल रात को टैलीविजन देख रहे थे.

बच्चो, बहुत रात हो गई है. तुम दोनों को बेड पर सोने जाना चाहिए. कल तुम्हें स्कूल जाना है.

सिर्फ 5 मिनट और दादाजी. यह सीरियल जल्दी खत्म होने वाला है.

तुम दोनों 5 मिनट और कह कर हर बार समय बढ़ा रहे हो और इस तरह काफी देर हो चुकी है. जल्दी सुबह होने वाली है. फिर तुम सोओगे कब?

बच्चो, शायद तुम्हें नहीं पता कि कम सोना स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह है.

कब क्या, दादाजी? हम थोड़ी देर सो लेंगे.

इतना सोने से काम नहीं चलेगा. कम सोने से तुम्हें कई दिक्कतें आएंगी, याद्दाश्त कम होगी और तुम भुलक्कड़ बन जाओगे. इस से चिड़चिड़ापन भी बढ़ेगा.

क्या नुकसानदेह, दादाजी? दिन में हम थोड़ी सी झपकी ले लेंगे.

MAGAZINE KING

मिल गया कंगन

कहानी ● पूनम पांडे

दादीमां सुबहसुबह सैर कर के अभी लौट ही रही थीं कि तभी कालोनी की प्रैसीडैंट उन के घर आई और उन्हें कालोनी वालों द्वारा आयोजित एक रंगारंग कार्यक्रम में आने का निमंत्रण दिया. वहां दादीमां को भी विशेष रूप से बुलाया गया था. बस, इसी खुशी में दादीमां अपना रक्तचाप, अपनी कमजोर नजर और दूसरी परेशानियां भूल सी गई थीं.

मोनू ने दादीमां का मिजाज पूछा तो वे कहने लगीं, ''कुछ भी हो जाए, मैं तो प्रोग्राम देखने जाऊंगी,'' दादीमां ने जोर दे कर कहा. दादीमां ने अपनी अलमारी खोली और उस में से अपनी पसंदीदा खूबसूरत रेशमी साड़ी पहनने के लिए निकाली.

''लेकिन दादीमां, आप तो अकसर अपनी बढ़ती उम्र की शिकायत करती रहती हैं,'' मोनू ने चिढ़ाते हुए कहा.

''ऐसा है मोनू, सच तो यह है कि इंसान की उम्र

विश्व के 45 प्रतिशत लोग नींद की समस्या से पीड़ित हैं. इस समस्या के प्रति जागरूकता लाने के लिए 13 मार्च को विश्व निद्रा दिवस मनाया जाता है.
हम समझ गए हैं दादाजी, मनोरंजन की तरह ही नींद भी बहुत जरूरी है.
SONAL
रिया और राहुल ने टैलीविजन का स्विच औफ किया और सोने के लिए बेड पर चले गए.

उतनी ही होती है जितना वह महसूस करता है,'' उन्होंने जवाब दिया तो मोनू हंसते हुए स्कूल चला गया.

दादीमां उत्सुकता से एकएक दिन कर रंगारंग कार्यक्रम की प्रतीक्षा करने लगीं. समय पर कालोनी के पार्क में सुबह से ही सजावट शुरू हो गई. दादीमां के लिए भी फोन आ गया था. दादीमां हड़बड़ी में घर गईं और उन्होंने साड़ी के साथ मैचिंग गहने भी पहने. दादीमां घर में सब से पहले तैयार हो गईं.

दादीमां को सब से आगे की सीट पर बिठाया गया. सब आ गए थे पर किसी गड़बड़ी की वजह से कार्यक्रम शुरू नहीं हो पाया था. आखिर, प्रैसीडैंट ने अनाउंस किया कि जिस कलाकार को स्वागत गीत गाना था उस की बस छूट गई है. इसीलिए कार्यक्रम शुरू करने में देरी हो रही है.

फिर तो दादीमां ने आव देखा न ताव वे स्टेज पर चढ़ीं और माइक पकड़ कर उन्होंने अपने स्कूली दिनों का स्वागत गीत गाया. दर्शकों ने दादीमां का तालियां बजा कर शुक्रिया अदा किया.

इस के बाद कार्यक्रम शुरू हो गया. वहां स्नैक्स आदि सर्व करने के लिए कुछ वैटर बुला रखे थे. एक वैटर बारबार दादीमां के पास आ रहा था. वह दादीमां को पानी, चाय आदि दे रहा था.

अचानक दादीमां ने अपने मोबाइल से मोनू को मैसेज किया, ''मोनू, मेरा सोने का कंगन हाथ से अचानक गायब हो गया है.''

मोनू हौलेहौले दादीमां के पास आ कर बैठ गया. उस ने आंखों ही आंखों में उन्हें इशारा किया, ''बस, ऐसे ही खामोश बैठो वरना सारी पब्लिक परेशान हो जाएगी, बेकार में हल्लागुल्ला होगा. कलाकारों की अभी और भी प्रस्तुतियां बची हैं.''

MAGAZINE KING

दादीमां ने उस का संदेश मोबाइल पर पढ़ा. लिखा था, ''चायपानी पिलाने वाले वैटर पर नजर रखना.''

अब दादीमां का माथा ठनका और उन्होंने याद किया कि वैटर ने पानी देते हुए दादीमां को दोनों हाथों से थाम लिया था. अब तो सारा का सारा माजरा बुद्धिमान दादीमां भी समझ गईं और उन्होंने धीमी सी मुसकान में हामी भर दी.

कुछ समय बाद वह वैटर फिर आया. उस ने दादीमां को पानी दिया मगर दादीमां ने उस का हाथ पकड़ लिया और तीखी नजरों से उस को घूरती रहीं.

वैटर सब समझ गया कि उस का भांडा फूट गया है और सब के सामने उस की फजीहत होने वाली है, इसलिए उस ने अपनी जेब में हाथ डाला और वह कंगन वहीं दादीमां की गोद में गिरा कर भाग गया.

किसी को इस घटना की कानोंकान खबर नहीं हुई. दादीमां ने मोनू को संकेत किया और कंगन दिखाया.

मोनू फिर चुपचाप उठा और बाहर निकला. उस ने दौड़ते हुए वैटर को पकड़ा. वैटर काफी डर गया था, मोनू ने पुलिस को फोन कर दिया.

''मैं इस के लिए माफी चाहता हूं,'' वह सुबकते हुए बोला.

''मुझे जरूरत थी इसलिए मैं ने कंगन चोरी किया. मैं जानता हूं कि मैं ने गलत काम किया. ऐसा मैं दोबारा कभी नहीं करूंगा, कृपया मुझे छोड़ दीजिए,'' उस ने मोनू से विनती की.

मोनू वैटर को छोड़ कर वापस अपनी सीट पर बैठ गया. कार्यक्रम समाप्त हो गया. दादीमां खुश थीं उन्होंने पूरे कार्यक्रम का मजा लिया.

केवल दादीमां ने ही नहीं बल्कि मोनू ने भी उस शाम का आनंद लिया, लेकिन साथ ही उन्होंने एक चोर को भी पकड़ा. वह वैटर फिर कभी कालोनी में नहीं दिखा. ●

विश्व रंगमंच दिवस

विश्व रंगमंच दिवस 27 मार्च को मनाया जाता है.
छायाचित्रों का मिलान उन के सही चित्र से करें.

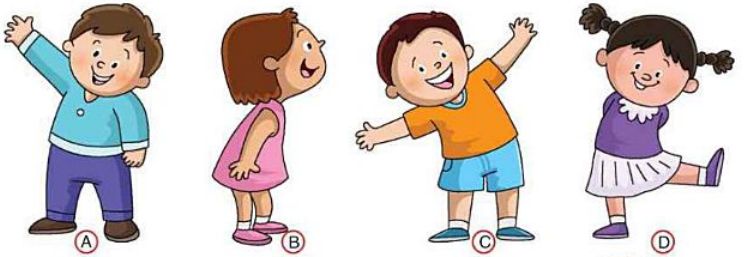

MAGAZINE KING

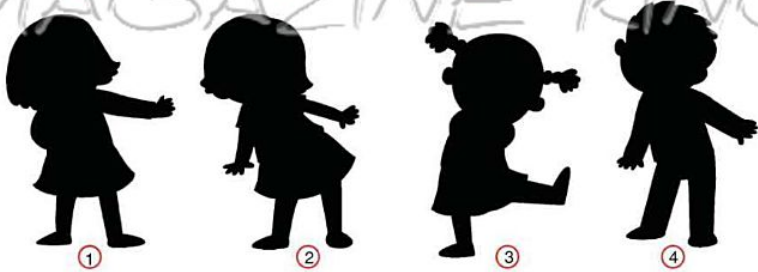

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

चंपक पत्रिका बड़े गर्व के साथ चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटैस्ट सीजन-7 का रिजल्ट घोषित कर रही है.

सीजन 7

अंतरिक्ष

राजमहल के 2 नन्हे अंतरिक्षयात्री एक गुलदस्ता अंतरिक्ष में छोड़ आए.

वे बड़े जोश में दौड़े, लेकिन शिष्टाचार भूल गए. अंत में उन्होंने गुलदस्ते को बिना तल के पाया. उन्होंने फिर से उस के तल को लगाया जब वे अंतरिक्ष में शोरबा पी रहे थे.

यश आर्य, 11 वर्ष
नवी मुंबई

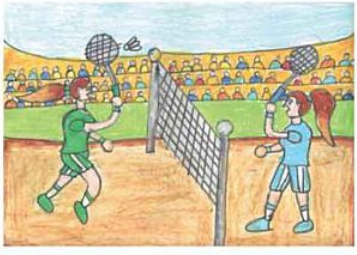

संयुक्ता सुनील महाकल, 10 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (एमआइडीसी), डोंबिवली

इचा जे. गाला, 10 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (एमआइडीसी), डोंबिवली

दृशा रमेश शेट्टी, 9 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (एमआइडीसी), डोंबिवली

एक मजेदार ड्राइंग प्रतियोगिता

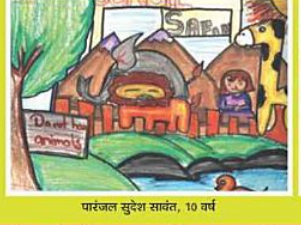

पारंजल सुदेश सावंत, 10 वर्ष

सनाक्षी देवेंद्र कोली, 7 वर्ष

हिताली वीरज चौधरी, 6 वर्ष

चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटैस्ट का आयोजन मौडल इंगलिश स्कूल (एमआइडीसी) डोंबिवली में किया गया. 130 छात्रों ने कौंटैस्ट में भाग लिया और अपनी ड्राइंग्स जमा कराईं. विजेताओं को सर्टिफिकेट्स दिए गए.

पार्थ शशिकांत सुवर्णा, 6 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (रामनगर), डोंबिवली

सोहम खंडारे विक्रम, 7 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (रामनगर), डोंबिवली

सभी विजेताओं और भाग लेने वाले पाठकों को चंपक की ओर से बधाई और प्यार. आप भी कलम और कलर्स उठाइए और अपनी कला को हम तक पहुंचाएं. भाग लेने के लिए इस अंक में प्रकाशित 'चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटेस्ट' का विज्ञापन पढ़ें. जल्दी करें!

श्रवण नरनाथ सालुंखे, 6 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (रामनगर), डोंबिवली

इस महीने वाइल्ड कार्ड से प्रवेश का विषय है :

- पृथ्वी दिवस
- विश्व पुस्तक दिवस
- विश्व धरोहर दिवस

आप अपनी सामग्री ए4 साइज में ही भेजें.

हमारा पता : चंपक, दिल्ली प्रैस,
ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई-400031.
ईमेल : writetochampak@delhipress.in
फेसबुक पेज पर विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine

दीत्या बारायाला, 7 वर्ष

वर्धन आर. इंगले, 8 वर्ष

तिविशा राहुल जैन, 7 वर्ष

चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटेस्ट का आयोजन मौडल इंगलिश स्कूल (रामनगर) डोंबिवली में किया गया. 32 छात्रों ने कौंटेस्ट में भाग लिया और अपनी ड्राइंग्स जमा कराईं. विजेताओं को सर्टिफिकेट्स दिए गए.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारी और उन की त्वचा

जैसेजैसे हमारा शारीरिक विकास होता वैसेवैसे हमारे कपड़े छोटे और टाइट हो जाते हैं और हमारा शरीर कपड़े से बाहर निकलता है. ठीक इसी तरह टिड्डे भी जब बढ़ते हैं तो उन की त्वचा उन के लिए छोटी पड़ जाती है.

यह त्वचा बाहरी सख्त कवर या खोल है, जो टिड्डे के शरीर को ढके रहती है. बाहरी खोल टिड्डे के मुलायम अंदरूनी अंगों को सुरक्षा देता है और उन्हें एक आकार में रखता है. हालांकि यह खोल टिड्डे के बढ़ने के साथसाथ फैलता नहीं है.

इस तरह जब टिड्डा अपने बाहरी खोल से बड़ा हो जाता है, तब निर्मोचन की क्रिया यानी केंचुली उतारने का काम शुरू होने लगता है, जैसा कि सामान्यतौर पर सांप और छिपकलियों के मामले में देखने को मिलता है.

केंचुल निकालने के लिए टिड्डा अधिक मात्रा में हवा खींचता है, ताकि उस का शरीर फैले और बाहरी खोल टूट जाए. जब यह खोल गिर जाता है, तब टिड्डा मुलायम त्वचा से ढका होता है और धूप के प्रभाव में आने से वह कठोर हो जाता है. इस तरह फिर बाहरी कंकाल मजबूत बन जाता है. टिड्डा जब शिशु अवस्था में होता है तब अपने बाहरी कंकाल को वह कई बार गिराता है. वह वयस्क की तरह दिखता तो है, लेकिन उस के पंख नहीं होते हैं. आखिरी बार केंचुल त्यागने के बाद इस के पंख पूर्णतः काम करने लगते हैं.

टिड्डे का कान उस का पेट होता है, जो उस के पंखों के नीचे उभरा होता है.

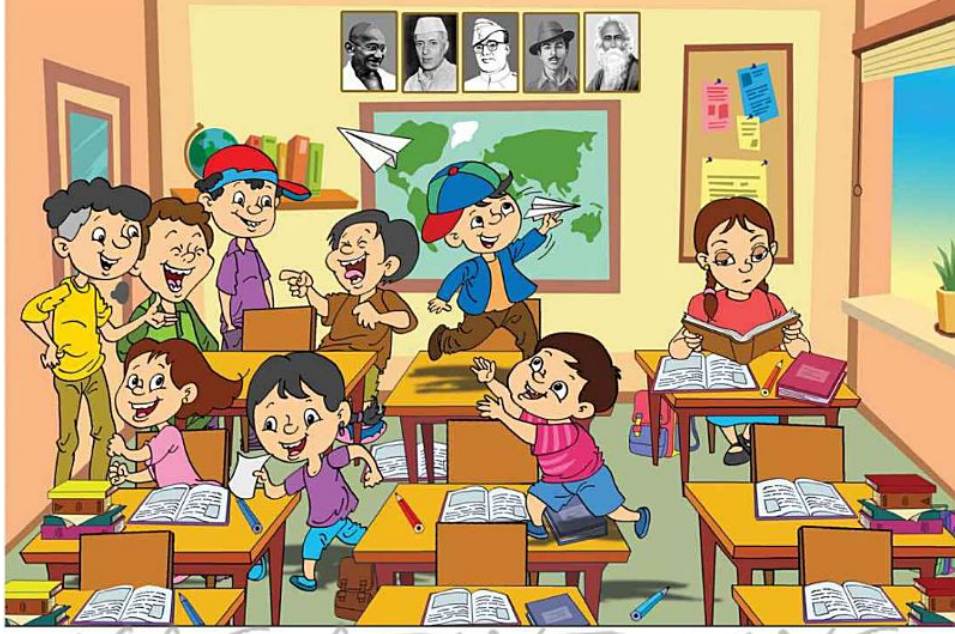

MAGAZINE KING

संकोची मनु

कहानी ● हरीश भंडारी

मनु शांत और शर्मीली लड़की थी. वह भोलीभाली और बहुत कम बोलती थी, कभी भी कक्षा में किसी से लड़ाईझगड़ा नहीं करती थी.

यहां तक कि मनु घर पर भी अपने छोटे भाई आदित्य से कभी नहीं लड़ती थी, जो काफी शरारती था.

स्कूल से आएदिन उस की शिकायतें आती रहतीं. उस की मम्मी जब पीटीएम में स्कूल जातीं तो सभी टीचर्स उस की शरारतों से परेशान हो कर उन से शिकायत करतीं.

लेकिन आदित्य पढ़ाई में काफी तेज था जबकि मनु खेलकूद में हमेशा आगे रहती. अभी कुछ दिन पहले ही वह वौलीबौल की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल होने ओडिशा गई थी. उस की टीम को प्रथम पुरस्कार मिला था.

मनु इतनी संकोची और शर्मीली थी कि वह कभी अपनी क्लास में टीचर से भी प्रश्न नहीं पूछती थी. इस वजह से सारे बच्चे उसे

MAGAZINE KING

शर्मीली लड़की के नाम से जानते थे. मनु के मम्मीपापा भी उस के शर्मीले और संकोची स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थे. उस के पापा सेना अधिकारी थे. मनु के स्वभाव से वे चिंतित रहते थे कि आखिर यह लड़की गुमसुम क्यों रहती है. यह सब से खुल कर बातें क्यों नहीं करती?

जब मनु प्राइमरी स्कूल तक भी नहीं बदली तो उस की मम्मी की चिंता बढ़ गई.

एक दिन पीटीएम से लौटते समय रिया की मम्मी मनु की मम्मी से बोलीं, ''मनु बहुत शर्मीली है. अपनी सहेलियों से भी कम बोलती है. आप इस बात को गंभीरता से लीजिए. लड़की का इतना संकोची होना अच्छी बात नहीं है. आज का समाज तो ऐसी भोलीभाली लड़कियों को चैन से नहीं जीने देता. मेरा सुझाव है कि आप उस से बात कर के देखें.''

मनु की मम्मी बोली, ''मैं ने उस से इस बारे में बात की है, मनु ने कहा कि वह अपने हिसाब से रहना चाहती है. मैं उस पर दबाव नहीं डालना चाहती. आगे चल कर वह भी तेजतर्रार हो जाएगी अकसर कई बच्चे इस उम्र में हिचकिचाहट महसूस करते हैं, लेकिन बाद में वे तेजतर्रार हो जाते हैं.''

मनु अपनी कक्षा में जितनी संकोची थी, उतनी ही वह खेलकूद व पढ़नेलिखने में भी होशियार थी. यह बात उस के टीचर्स के

साथसाथ उस के पेरेंट्स को भी मालूम थी.

क्लास में ज्यादातर लड़कियों का ध्यान पढ़ने में कम और इधरउधर की बातों में ज्यादा रहता था. अकसर बच्चे क्लास में अपने अध्यापकअध्यापिकाओं की नकल उतारा करते थे. कुछ लड़कियां टीना, रिया और वर्णिका उस की अच्छी दोस्त बन गई थीं.

टीचर्स जब भी क्लास में बच्चों से सवाल पूछने के लिए किसी छात्र को खड़ा करतीं तो टीना और रिया अपनेअपने बैगों से कागज निकालतीं और उस की लंबी सी पूंछ बना कर खड़े छात्र के पीछे लटका देती. पूंछ देख कर क्लास के सभी छात्र जोर से ठहाका लगाते.

मनु को उन की ये हरकतें बुरी लगतीं, लेकिन अपने संकोची स्वभाव के कारण वह उन की शिकायत टीचर से नहीं कर पाती.

एक दिन मनु की मम्मी को मार्केट में रिया और वर्णिका मिल गईं. वे दोनों उन से मनु की बुराई करने लगीं, ''आंटीजी, मनु बिलकुल भी नहीं पढ़ती है. जब भी टीचर उस से कुछ पूछते हैं तो वह मुंह लटका देती है.

''वह क्लास में काम भी कभी पूरा नहीं करती, इसलिए हमेशा उस को सी ग्रेड मिलता है,'' रिया ने कहा.

वर्णिका बोली, ''वह हमेशा डरीसहमी रहती है.''

मनु की मम्मी ने घर पहुंच कर इन सब बातों को मनु के पापा को बताया. आजकल वे छुट्टी आए हुए थे.

यह सब सुन कर उस के पापा ने मनु की टैस्ट कौपियां देखीं, लेकिन किसी भी सब्जैक्ट में उसे सी ग्रेड नहीं मिला था. वह हर सब्जैक्ट में ए और बी ग्रेड लाई थी.

आखिरकार, मनु के पापा ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, ''देखो बेटा, तुम पढ़ने में काफी अच्छी हो, तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा है, तुम किसी भी तरह से किसी से कम नहीं हो, फिर तुम अपनी इन नकचढ़ी सहेलियों की बातों का विरोध क्यों नहीं करती. क्यों चुपचाप इन की अनापशनाप बातें सुनती रहती हो?

''विद्यार्थियों की सब से अच्छी दोस्त तो उन की पाठ्यपुस्तकें होती हैं, जो उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता दिखाती हैं. तुम्हारी ये सहेलियां कभी नहीं चाहेंगी कि तुम आगे बढ़ो. इन से डरती तुम नहीं हो बल्कि वे डरती हैं. उन्हें हमेशा इस बात का डर रहता है कि यदि तुम्हारे अच्छे नंबर आएंगे तो उन की पोल खुल जाएगी.''

पापा की बातों का मनु पर गहरा असर हुआ. वह बोली, ''पापा, आप यह समझिए कि मेरे डर और संकोच का यह आखिरी दिन है. अब यदि कोई मेरे बारे में ऐसी बातें करेगा तो मैं उसे करारा जवाब दूंगी.

''मैं पढ़ाईलिखाई में उन लड़कियों से ज्यादा तेज हूं. मुझे उन से ज्यादा बोलना आता है, लेकिन मैं शिष्टाचार को बढ़ावा देती हूं. मैं अवश्य आप को कुछ बन कर दिखाऊंगी.''

मनु के चेहरे से आत्मविश्वास झलक रहा था. मनु की मां ने उसे अपने सीने से लगा लिया. ●

उत्तर पृष्ठ :

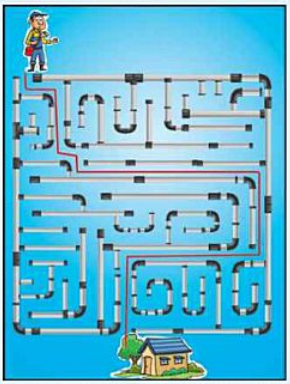

पृष्ठ 23 : रास्ता बताओ :

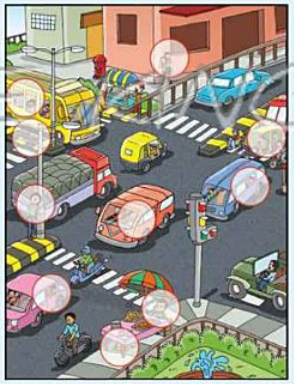

पृष्ठ 35 : छिपे चित्र ढूंढ़ें :

पृष्ठ 41 : विश्व गौरैया दिवस : 1. चीन, अंटार्कटिका, जापान, 2. नई दिल्ली, 3. सरसफल, पतंगा, छोटे कीड़े, बीज, 4. पुल, छत, पेड़ के कोटर, 5. प्रदूषण, पेड़ों की कमी, 6. आप के घरों के बाहर झूलते कृत्रिम घोंसले, अधिक से अधिक पेड़ लगाना.

पृष्ठ 51 : विश्व रंगमंच दिवस :
1-F, 2-H, 3- D, 4-E, 5-G, 6- A, 7-B, 8-C.